॥ श्रीहरिः ॥ 417▲

भगवन्नाम



स्वामी रामसुखदास

॥ श्रीहरिः ॥

भगवन्नाम

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

स्वामी रामसुखदास

सं० २०४३ से २०६० तक	३,५३,०००
सं० २०६१ उनतीसवाँ संस्करण	१०,०००
	योग ३,६३,०००

मूल्य—चार रुपये

प्रकाशक एवं मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान
फोन : (०५५१) २३३४७२१; फैक्स २३३६९९७
website : www.gitapress.org | e-mail : booksales@gitapress.org

॥ श्रीहरिः ॥

भगवन्नाम

नाम-महिमा

राम राम राम·····················

एक भी श्वास खाली खोय ना खलक बीच,
कीचड़ कलंक अंक धोय ले तो धोय ले;
उर अँधियारो पाप-पुंज सों भरी है देह,
ज्ञानकी चराखाँ चित्त जोय ले तो जोय ले।
मानखा जनम फिर ऐसो ना मिलेगा मूढ़,
परम प्रभुजीसे प्यारो होय ले तो होय ले;
छिन भंग देह ता में जनम सुधारिबो है,
बीजके झबाके मोती पोय ले तो पोय ले॥

भाई-बहिनोंने पैसोंको बहुत कीमती समझा है। पैसा इतना कीमती नहीं है, जितना कीमती हमारा समय है। मनुष्य-जन्मका जो समय है, वह बहुत ही कीमती है। मनुष्य-जन्मके समयको देकर हम मूर्खसे विद्वान् बन सकते हैं। समयको देकर हम धनी बन सकते हैं। समय लगनेपर एक आदमीके परिवारके सैकड़ों लोग हो जाते हैं। समयको लगाकर हम संसारमें मान, आदर, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त कर सकते हैं; बहुत बड़ी जमीन-जायदाद आदिको अपने अधिकारमें कर सकते हैं। समय लगनेसे स्वर्गादि लोकोंकी प्राप्ति हो सकती है। इतना ही नहीं, मनुष्य-शरीरका समय लगानेसे हो जाय परमात्मतत्त्वकी प्राप्ति, जिसके बाद प्राप्त करना कुछ बाकी न रहे। इस प्रकार समय लगाकर सांसारिक सब चीजें प्राप्त हो सकती हैं; परन्तु सब-की-सब चीजें, रुपये-पैसे आदि देनेपर भी जीनेका समय नहीं मिलता।

जैसे, आपने सत्तर-पचहत्तर वर्षोंकी उम्रमेंसे साठ वर्ष रुपये कमानेमें

लगाये, साठ वर्षोंमें बहुत जमीन-जायदाद इकट्ठी कर ली, मकान बना लिये, बहुत सम्पत्ति इकट्ठी कर ली। अब उस सम्पत्तिको पीछे देकरके अगर हम साठ घंटे भी और जीना चाहें तो जी सकते हैं क्या ? इसमें थोड़ा-सा विचार करें। जिस सम्पत्तिके संग्रहमें साठ वर्ष खर्च हुए, उस सम्पूर्ण सम्पत्तिको देकर हम साठ घंटे भी खरीद सकते हैं क्या ? एक वर्षकी कीमतमें हम एक घंटा भी लेना चाहें तो नहीं मिल सकता। जिस पूँजीके बटोरनेमें एक वर्ष लगा, उस पूँजीके बदलेमें एक मिनट और साठ वर्षकी पूँजीसे साठ मिनट लेना चाहें तो नहीं मिल सकते तो हमारा समय बरबाद हो गया न ?

वैश्य भाई ऐसा व्यापार नहीं करते कि जिसमें पूँजी तो लग जाय और पीछे कौड़ी एक बचे नहीं। व्यापारमें तो कुछ-न-कुछ पैदा होना ही चाहिये, परन्तु इधर साठ वर्षोंकी उम्रमें जितनी पूँजी इकट्ठी की, उसके बदलेमें साठ महीने मिल जायँ, साठ दिन मिल जायँ तो भी बारहवाँ अंश तो मिला; परन्तु साठ दिन तो दूर रहे साठ घंटा, साठ मिनट भी नहीं मिलते और समय हमारा लग गया साठ वर्षका, तो हम बहुत घाटेमें चले गये। बहुत क्या, केवल कोरा घाटा-ही-घाटा।

आज दिनतकके समयमें हमने जो संग्रह किया है, उस संग्रहके बदलेमें हमारा गया हुआ समय मिलेगा क्या ? नहीं मिलेगा। ऐसे समय बरबाद न हो, इसके लिये आजसे ही विशेषतासे सावधान हो जायँ। हम विशेष सावधान तभी हो सकते हैं, जब निर्णय करके आयें कि हम क्या चाहते हैं। यदि हम रुपये-पैसे चाहते हैं, मान-बड़ाई चाहते हैं, नीरोगता चाहते हैं, सदा जीते रहना चाहते हैं तो ये सब बातें कभी नहीं हो सकतीं, असम्भव हैं।

मनुष्योंको इसका भी होश नहीं है कि हम क्या चाहते हैं ? हमारी असली चाह क्या है—इसका भी पता नहीं है; क्योंकि हम खोज ही नहीं करते, इधर ध्यान ही नहीं देते कि वास्तवमें हमारी चाह क्या है। इस वास्ते

सज्जनो ! इसमें तो स्वयं आपको सोचना होगा। इसमें कोई सहारा देनेवाला नहीं है। जब मृत्यु आयेगी, उस समयमें प्यारे-से-प्यारे, ज्यादा स्नेह रखनेवाले रो देंगे। इसके सिवाय और क्या कर सकते हैं वे ? कुछ भी सहायता नहीं कर सकते। अगर आप भजन करते, भगवान्‌में लगते, तो क्या यह दुर्दशा होती ?

'धनवंता सोई जानिये जाके राम-नाम धन होय।'

राम-नामरूपी धन पासमें होता तो मरनेपर वह पूँजी साथमें चलती। भजन आपने किया है, भगवान्‌का नाम लिया है, भगवान्‌का चिन्तन किया है, सद्भावोंका संग्रह किया है, अपनी प्रकृति सुधार ली है अर्थात् अपने स्वभावका सुधार कर लिया है तो वह आपके साथ चलेगा। परन्तु यहाँकी चीजें बटोरी हैं, ये साथमें नहीं चलेंगी। स्वभावमें जो बात आ गयी, वह साथमें चलेगी। आपने अपना स्वभाव जितना शुद्ध बना लिया, उतना आपने काम कर लिया। जितना भजन आपने कर लिया, आपने उतना संग्रह कर लिया; उतनी साथ जानेवाली पूँजी हो गयी। यह पूँजी ऐसी विलक्षण है कि सांसारिक धनको चुरानेवाले जो चोर-डाकू हैं न ? वे भी उस पूँजीको चुरा नहीं सकते। आपकी सांसारिक पूँजीपर डाका पड़ता है; परन्तु भजनरूपी पूँजीपर डाका नहीं पड़ता। शरीर यहाँ रहेगा तो वह पूँजी आपके साथ रहेगी और शरीर जायगा तो वह पूँजी आपके साथ जायगी। इसका भार नहीं होगा, बोझा नहीं होगा।

यहाँ संसारमें रहते हुए भाई अलग-अलग होते हैं, तो उनमें पूँजीका, घरका बँटवारा होता है; परन्तु आपके इस धनका कभी बँटवारा नहीं होगा कि इतना उसके हिस्सेमें आता है। इतना अमुक-अमुकके हिस्सेमें आता है। पर यह धन कभी घटता नहीं और कभी मिटता भी नहीं। परमात्माकी प्राप्ति करा देता है। दुःखोंका सदाके लिये अन्त करा देता है। महान् आनन्दकी प्राप्ति करा देता है। ऐसा भजन करनेके लिये हमारी जीभ सदा खुली है। खास बात हो तो बोलो, उसके सिवाय नाम जपते रहो—

हाथ काम मुख राम है, हिरदे साँची प्रीत।
दरिया ग्रेही साध की याही उत्तम रीत॥

जो हाथसे तो काम-धन्धा करते रहे और मुखसे राम राम राम...... चलता रहे और हृदयमें भगवान्‌से अपनापन हो, वह गृहस्थी सन्त है। इस साधनको सभी भाई-बहन स्वतन्त्रतासे कर सकते हैं। हृदयमें भगवान्‌के प्रति सच्चा प्रेम हो कि भगवान् हमारे हैं और हम भगवान्‌के हैं। संसार हमारा नहीं है और हम संसारके नहीं हैं। संसारकी सेवा कर देनी है; क्योंकि संसारकी सेवाके लिये ही यहाँ आना हुआ है। संसारसे लेनेके लिये नहीं आये हैं हम। यहाँ लेना कुछ नहीं है। यहाँकी ये चीजें साथ चलेंगी नहीं। मेरी-मेरी कर लोगे तो अन्तःकरणमें मेरेपनका जो संस्कार पड़ेगा, वह जन्म देगा, दुःख देगा—

'मायामें रह जाय बासना अजगर देह धरासी।'

रुपये-पैसोंमें वासना रह गयी तो साँप बनना पड़ेगा। धन साथमें नहीं चलेगा और यदि भगवद्भजन कर लोगे तो वह साथमें चलेगा। वह असली पूँजी है—

'राम नाम धन पायो प्यारा,
जनम जनमके मिटत बिकारा।'

'पायो री मैंने राम रतन धन पायो।'

सन्तोंकी वाणीमें जहाँ गुरु महाराजकी महिमा गायी है, उसमें कहा है—'गुरुजी महाराज बड़े दाता मिले। उन्होंने हमारेको भगवान्‌का नाम देकर धनवान् बना दिया—***'धिन-धिन धनवंत कर दिया गुरु मिलिया दातार।'*** सज्जनो! इसकी कीमत समझनेपर फिर महिमा समझमें आती है कि नाम कितना विलक्षण है। सन्त-महात्माओंसे जिनको नाम प्राप्त हुआ है, वे लोग गुण गाते हैं। जो अच्छे-अच्छे महापुरुष हो गये हैं, वे भी गुरुकी महिमा गाते हैं। किस बातको लेकर? कि महाराजने हमारेको भगवान्‌का नाम दे दिया।

उस नामसे क्या-क्या आनन्द होता है, उसका कोई पारावार नहीं। नाम महाराजकी अपार महिमा है, असीम महिमा है। गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज सीतारामजीको इष्ट मानते हैं और वे उनके अनन्य भक्त हैं; परन्तु नामकी महिमा गाते हुए वे कहते हैं—***'कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई'*** ॥ नामकी महिमा मैं कहाँतक कहूँ, भगवान् राम भी नामकी महिमा कह सकते नहीं। अपने इष्टको भी असमर्थ बता देते हैं अर्थात् इस नामकी महिमाके विषयमें हमारे श्रीरघुनाथजी भी असमर्थ हैं। भाई, नामकी महिमा यहाँतक है, यहाँतक है, ऐसा कहनेमें भगवान् भी असमर्थ हैं। अपने इष्टको भी असमर्थ बता देना क्या तिरस्कार नहीं है? नहीं, नहीं, आदर है। कैसे? इस नामकी इयत्ता (सीमा) है ही नहीं कि भाई, इसकी इतनी-इतनी महिमा है। नामकी तो अपार असीम महिमा है। वह नाम हर समय लिया जा सकता है। काम-धन्धा करते हुए, उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते आदि हर समयमें भगवान्‌का नाम लिया जा सकता है। चैतन्य महाप्रभु कहते हैं—भगवान्‌ने नाममें अपनी पूरी-की-पूरी शक्ति (महिमा) रख दी है और इसमें विलक्षणता यह है कि इसके लेनेमें कोई समय नहीं बाँधा गया है कि अमुक समयमें नाम ले सकते हो, उसके सिवाय नहीं, प्रत्युत भगवान्‌ने तो नाम लेनेमें सब समय छूट दे रखी है। नामको तो सुबह, शाम, दोपहर, रात्रि—हर समय ले सकते हैं—

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पितानियमितः स्मरणे न कालः।
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः॥

कई लोग कहते हैं कि क्या करें, हमारे नाम लेना लिखा नहीं है। सज्जनो! अभी नाम-जप करके नाम लिखा लो, इसमें देरीका काम नहीं है। इसका दफ्तर हर समय खुला है, कभी करो। दिनमें, रातमें, सुबहमें, शाममें, सम्पत्तिमें, विपत्तिमें, सुखमें, दुःखमें आप भगवान्‌का नाम लें तो

अभी लिखा जायगा और नामकी पूँजी हो जायगी। अब नामको भूल न जायँ, इसका ख्याल रखना है। उसके लिये एक उपाय बतायें। आपलोग ध्यान देकर सुनें। आपलोग मन-ही-मन भगवान्‌को प्रणाम करके उनसे यह प्रार्थना करें—'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं, हे प्रभो! आपको मैं भूलूँ नहीं'—ऐसा मिनट-मिनट, आधे-आधे मिनटमें आप कहते रहो। नींद खुले तबसे लेकर गाढ़ी नींद न आ जाय तबतक 'हे प्रभो! आपको मैं भूलूँ नहीं।' ऐसा कहते रहो। राम-राम-राम कहते हुए साथमें कह दें—'हे नाथ! मैं भूलूँ नहीं।'

जब आप राम-राम-राम कह रहे हैं, राम-राम-राम कहते हुए भी मनसे दूसरी बात याद आ जाती है, उस समय हम भगवान्‌को भूल जाते हैं तो भगवान्‌से कहो—'हे नाथ! मैं भूलूँ नहीं, हे प्रभो! भूलूँ नहीं। हे नाथ! मैं आपका नाम लेता रहूँ और आपको भूलूँ नहीं।' भगवान्‌से ऐसी प्रार्थना करते रहो तो भगवान्‌की कृपासे यह भूल मिट जायगी। भजन होने लगेगा। फिर अखण्ड भजन होगा, अखण्ड! ***'ताली लागी नामसे और पड्यो समँदसे सीर'*** भगवान्‌के नामकी धुन लग जायगी। फिर आपको भीतर स्मरण करनेका उद्योग नहीं करना पड़ेगा। स्वतः ही भगवान्‌की कृपासे भजन चलेगा। परन्तु पहले आप नाम लेनेकी चेष्टा करो और भगवान्‌से प्रार्थना करो।

कोई १९६०—६५ विक्रम संवत्‌की बात होगी, हमें मिति ठीक याद नहीं है। मैंने एक सन्तका पत्र पढ़ा था, जो कि उन्होंने अपने प्रेमीके प्रति दिया हुआ था। छोटा कार्ड था। पहले छोटा कार्ड हुआ करता था। एक-दो पैसेके कार्डमें मैंने समाचार पढ़ा था। अपने सेवकके प्रति लिखा था—'एक नाम छूट जाय, इतना काल—समय अगर खाली चला जाय, तो ब्याहा हुआ बड़ा बेटा मरे, उससे भी ज्यादा शोक होना चाहिये।' राम! राम! राम! गजब हो गया! यह लिखा था उसमें। ब्याहा हुआ लड़का मर जाय तो हृदयमें एक चोट पहुँचती है कि ऐसा कमानेवाला सुपुत्र बेटा

मर गया तो उससे भी ज्यादा दुःख होना चाहिये एक नाम उच्चारण करें इतना खाली समय जानेपर। क्योंकि जो लड़के छोटे हैं वे बड़े हो जायँगे। गृहस्थोंके और फिर पैदा भी हो जायँगे। परन्तु समय थोड़े ही पैदा हो जायगा। जो समय खाली गया, वह जो घाटा पड़ा , वह तो पड़ ही गया। इस वास्ते हमें सावधानी रखनी चाहिये कि हमारा समय बरबाद न हो जाय— ***'जो दिन जाय भजनके लेखे, सो दिन आसी गिणतीमें'*** वह दिन गिनतीमें आवेगा। बिना भजनके जो समय गया, उसकी कोई कीमत नहीं, वह तो बरबाद हो गया। बड़ा भारी नुकसान हो गया, घाटा लग गया बड़ा भारी !

अबतक जो समय संसारमें लग गया, वह तो लग ही गया। अब सावधान हो जायँ। सज्जनो ! भाइयो-बहिनो ! दिनमें थोड़ी-थोड़ी देरीमें देखो कि नाम याद है कि नहीं। घरमें जगह-जगह भगवान्‌का नाम लिख दो और याद करो। भगवान्‌की तस्वीर इस भावसे सामने रख दो कि वे हमें याद आते रहें। हमें भगवान्‌को याद करना है। घरमें भगवान्‌का चित्र रखो पर इस भावनासे रखो कि तस्वीरपर हमारी दृष्टि पड़ते ही हमें भगवान् याद आयें। ऐसे भावसे रखकर सुन्दर-सुन्दर नाम लिख दो। जहाँ ज्यादा दृष्टि पड़ती हो, वहाँ नाम लिख दो।

ऐसे गृहस्थके घरको मैंने देखा है। सीढ़ीसे उतरते हैं, तो वहाँ नाम लिखा हुआ। सीढ़ीसे ऊपर चढ़ते हैं तो सामने नाम लिखा हुआ। जहाँ घूमते-फिरते हैं, वहाँ नाम लिखा हुआ। वे नाम इस वास्ते लिखे कि मैं भूल न जाऊँ, प्रभुके नामकी भूल न हो जाय। ऐसी सावधानी रखो सज्जनो ! यह असली काम है असली ! बड़ा भारी लाभ है इसमें— ***'भक्ति कठिन करूरी जाण। इसमें नफा घणा नहीं हाण ॥'*** इसमें नुकसान है ही नहीं। केवल नफा-ही-नफा है। बस, फायदा-ही-फायदा है। इस प्रकार अपना सब समय सार्थक बन जाय— ***'एक भी श्वास खाली खोय ना खलक बीच।'***

संसारके भीतर जो समय खाली चला गया तो बड़ा भारी नुकसान हो गया। श्रीदादूजी महाराज फरमाते हैं— ***'दादू जैसा नाम था तैसा लीन्हा नाय।'*** इस नामकी जितनी महिमा है, वैसा नाम नहीं लिया, जब कि उन्होंने उम्रभरमें क्या किया ? नाम ही तो जपा। परन्तु उनको लगता है कि नाम जैसा जपना चाहिये था वैसा नहीं जपा अर्थात् मुखसे जितना नाम लेना था, उतना नहीं लिया। अब ***'देह हलावा हो रहा'*** देहमेंसे बस, प्राण गये··· गये··· ऐसी उनकी दशा हो रही है, पर वे कहते हैं— ***'हुंस रही मन माय'*** भगवान्‌का नाम और लेते, और लेते। जैसे, धन कमानेवालेका लोभ जाग्रत् होता है तो उसके पास लाखों, करोड़ों रुपये हो जानेपर भी फिर नये-नये कारखाने खोलकर और धन ले लूँ—ऐसा लोभ बढ़ता ही रहता है। यह धन तो यहीं रह जायगा और हमारा समय बरबाद हो जायगा। यदि भगवान्‌में लग जाओगे तो नामका वैसे लोभ लगेगा जैसे सन्तोंने प्रार्थना की है कि हे भगवान् ! हमारी एक जिह्वासे नाम लेते-लेते तृप्ति नहीं हो रही है, इस वास्ते हमारी हजारों जिह्वा हो जायँ, जिनसे मैं नाम लेता ही चला जाऊँ। उनकी ऐसी नामकी लालसा बढ़ती ही चली जाती है।

मेरेको एक सज्जन मिले थे। वे कहते थे कि मैं राम-राम करता हूँ तो राम-नामका चारों तरफ चक्कर दीखता है। ऊपर आकाशमें और सब जगह ही राम-राम दीखता है। पासमें, चारों तरफ, दसों दिशाओंमें नाम दीखता है। पृथ्वी देखता हूँ तो कण-कणमें नाम दीखता है, राम-राम लिखा हुआ दीखता है। कोई जमीन खोदता है तो उसके कण-कणमें नाम लिखा हुआ दीखता है। ऐसी मेरी वृत्ति हो रही है कि सब समय, सब जगह, सब देश, सब काल, सब वस्तु और सम्पूर्ण व्यक्तियोंमें राम-नाम परिपूर्ण हो रहा है। यह कितनी विलक्षण बात है ! कितनी अलौकिक बात है !

भगवान् रामजीने लंकापर विजय कर ली। अयोध्यामें आकरके गद्दीपर विराजमान हुए तो उस समय राजाओंने रामजीको कई तरहकी भेंट दी। विभीषणने रावणके इकट्ठे किये हुए बहुत कीमती-कीमती रत्नोंकी

माला बनायी थी। माला बनानेमें यही उद्देश्य था कि जब महाराजका राज्यतिलक होगा, तब मैं भेंट करूँगा। इस तरहसे विभीषण वह माला लाया और समय पाकर उसने महाराजके गलेमें माला पहना दी। महाराजने देखा कि भाई, गहनोंकी शौक स्त्रियोंके ज्यादा होती है, ऐसे विचारसे रामजीने वह माला सीताजीको दे दी। सीताजीको जब माला मिली तो उनके मनमें विचार आया कि मैं यह माला किसको दूँ! महाराजने तो मेरेको दे दी। अब मेरा प्यारा कौन है ? हनुमान्‌जी पासमें बैठे हुए थे। हनुमान्‌जी महाराजपर सीतामाताका बहुत स्नेह था, बड़ा वात्सल्य था और हनुमान्‌जी महाराज भी माँके चरणोंमें बड़ी भारी भक्ति रखते थे। माँने हनुमान्‌जीको इशारा किया तो चट पासमें चले गये। माँने हनुमान्‌जीको माला पहना दी। हनुमान्‌जी बड़े खुश हुए, प्रसन्न हुए। वे रत्नोंकी ओर देखने लगे। जब माँने चीज दी है तो इसमें कोई विशेष बात है—ऐसा विचार करके एक मणिको दाँतोंसे तोड़ दिया, पर उसमें भगवान्‌का नाम नहीं था तो उसे फेंक दिया। फिर दूसरी मणि तोड़ने लगे तो वहाँपर बड़े-बड़े जौहरी बैठे थे। उन्होंने कहा—'बन्दरको तो अमरूद देना चाहिये! यह इन रत्नोंका क्या करेगा ? रत्नोंको तो यह दाँतोंसे फोड़कर फेंक रहा है।' किसीने उनसे पूछा—'क्यों फोड़ते हो ? क्या बात है ? क्या देखते हो ?' हनुमान्‌जीने कहा—'मैं तो यह देखता हूँ कि इनमें भगवान्‌का नाम है कि नहीं। इनमें नाम नहीं है तो ये मेरे क्या कामके ? इस वास्ते इनको फोड़कर देख लेता हूँ और नाम नहीं निकलता तो फेंक देता हूँ।'

उनसे फिर पूछा गया—'बिना नामके क्या तुम कुछ रखते ही नहीं ?' हनुमान्‌जीने कहा—'न, बिना नामके कैसे रखूँगा?' फिर पूछा गया—'तो तुम शरीरको कैसे रखते हो?' तब हनुमान्‌जीने नखोंसे शरीरकी त्वचाको चीर करके दिखाया। सम्पूर्ण त्वचामें जगह-जगह, रोम-रोममें राम, राम, राम, राम लिखा हुआ था—***'चीरके दिखाई त्वचा अंकित तमाम, देखी चाम राम नामकी।'*** तो जो नाम जपनेवाले सज्जन

हैं, वे नाममय बन जाते हैं।

दक्षिणमें पण्ढरपुर है। वहाँ नामदेवजी महाराज, ज्ञानदेवजी महाराज, सोपानदेवजी आदि कई नामी सन्त हुए हैं। बड़ी विचित्र उनकी वाणी है। वहाँ दक्षिणमें चोखामेला नामका एक चमार था। विट्ठल-विट्ठल-विट्ठल—ऐसे भगवान्‌का नाम जपता था। पण्ढरपुरके पास ही एक मंगलबेड़ा गाँव है। उसी गाँवमें वह रहता था। वहाँ एक मकान बन रहा था। उस मकानमें चोखामेला काम कर रहा था। मजदूरी करके वह अपनी जीविका चलाता था। अचानक वह मकान गिर पड़ा। मकान बहुत बड़ा था, गिर गया और उसमें चोखामेला दब गया। उसके साथ कई आदमी दबकर मर गये। उनको उसमेंसे निकालने लगे तो निकालते-निकालते कई महीने लग गये। उन सबको निकाला तो उनकी केवल हड्डियाँ पड़ी मिलीं। अब किसकी कौन-सी हड्डियाँ हैं, इसकी पहचान नहीं हो सकती। थोड़े दिनमें तो शरीरकी पहचान भी हो जाय। अब चोखामेलाकी हड्डियोंकी पहचान कैसे हो? तो शायद नामदेवजीने कहा हो कि भाई, उनकी हड्डियोंको कानमें लगाकर देखो। जिसमें विट्ठल-विट्ठल नामकी ध्वनि होती हो, वह हड्डी चोखामेलाकी, यह पहचान है। कितने आश्चर्यकी बात है कि मरनेके बाद भी हड्डीसे नाम निकलता है! भगवान्‌का नाम लेते-लेते भक्त नाममय ही हो जाते हैं—***'चंगा राख तन, मन, प्राण, रहीये नाममें गलतान।'*** बस, सब लोग इसमें गलतान हो जाओ, इस नाममें तल्लीन हो जाओ। तत्परतासे नाम लेनेवाले ऐसे सन्त हुए हैं।

अर्जुनके भी शरीरमेंसे भगवान्‌का नाम निकलता था। एक दिन अर्जुन सो रहे थे और नींदमें ही नाम-जप हो रहा था। शरीरके रोम-रोममेंसे कृष्ण-कृष्ण-कृष्ण नामका जप हो रहा था। नामको सुन करके भगवान् श्रीकृष्ण आ गये, उनकी स्त्रियाँ भी आ गयीं। नारदजी आ गये, शंकरजी आ गये, ब्रह्माजी आ गये, देवता आ गये। भगवान् शंकर नाम सुन-सुन करके नाचने लगे, नृत्य करने लगे। अर्जुनके तो बेहोशीमें—गाढ़ नींदमें

भी रोम-रोमसे कृष्ण-कृष्ण निकलता है। इसमें कारण यह है कि जिसका जो इष्ट होता है, वह उसीका नाम जपता है, तो वह नाम भीतर बैठ करके रग-रगमें होने लगता है। हरिरामदासजी महाराजकी वाणीमें आता है— ***'रग-रग आरम्भा, भये अचम्भा छुछुम भेद भणन्दा है।'*** सन्तोंकी वाणी आपलोग पढ़ते ही हो। उसमें आपलोग देखो। ऐसा उनका भजन होने लगता है, क्यों? उनकी वह लगन है। वे उसीमें ही तल्लीन हो गये। मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ नाममें लग गयीं, प्राण उसमें लग गये। शरीरमात्रमें नाम-जप होने लगा। कितने महान्, पवित्र, दिव्य उनके शरीर थे कि उनको याद करनेमात्रसे जीवका कल्याण हो जाय। वे तो नाम-रूप ही बन गये, भगवत्स्वरूप बन गये। नारदजी महाराज अपने भक्ति-सूत्रमें लिखते हैं कि भगवान् और भगवान्‌के जनोंमें भेद नहीं होता— **'तस्मिंस्तज्जने भेदाभावात्'**, क्योंकि वे उनके हैं, उस परमात्माके अर्पित हो गये हैं— **'यतस्तदीयाः।'**

जैसे आगमें काठ रखो तो अंगार बनकर चमकने लगेगा। काला-से-काला कोयला आगमें रख दो तो वह भी चमकने लगेगा। पत्थरका टुकड़ा आगमें रख दो, वह भी चमकने लगेगा। कुछ भी कंकर, ठीकरी रख दो, वे सब-के-सब चमकने लगेंगे। यह क्या है? यह आगका प्रभाव है। जब एक भौतिक वस्तुमें भी इतनी सामर्थ्य है कि वह काठ, पत्थर आदिको चमका दे तो फिर यह तो भगवान्‌का नाम है। यह भौतिक नहीं है, यह तो दिव्य है। यह नाम महाराज चेतनाको चेत करा देते हैं कि तू इधर ख्याल कर— ***'नाम चेतन कूं, चेत भाई नाम ते चित्त चौथे मिलाई।'***

आपलोगोंमें भी कोई नाम लेनेवाला हो तो मैं मानता हूँ कि आपके ऐसा होता होगा। आप सोते रहते हैं, गाढ़ नींदमें तो राम··· ऐसी आवाज आती है, आपको जगा देती है कि अरे! नाम लो, कैसे सोता है? इस प्रकार नाम महाराज खुद जगाते हैं। नाम महाराज खुद चेत कराते हैं।

स्वयं भगवान् चेत कराते हैं।

एक बड़े विरक्त सन्त थे। वे नाम जपते थे। कौड़ी-पैसा लेते नहीं थे, रखते नहीं थे, छूते ही नहीं थे। वे कहते थे कि बहुत बार ऐसा होता है, जब मैं सोता हूँ तो मुझे ऐसे प्यारसे उठाते हैं, जैसे कोई माँ उठाती हो। गरदनके नीचे हाथ देकर चट उठा देते हैं। मेरेको पता ही नहीं लगता कि न जाने किसने मेरेको बैठा दिया। तो नाम महाराज भगवान्‌की याद दिलाते हैं। मैं खुद अनुमान करता हूँ, आपमें भी कोई नाम-प्रेमी है, उसके भी ऐसा होता होगा। इसमें कोई गृहस्थका कारण नहीं है, कोई साधुका कारण नहीं है, कोई भाईका कारण नहीं, कोई बहनका कारण नहीं। कोई भी भाई-बहन इसका जप करेंगे, उसके भी यह बात हो जायगी। कभी भगवान्‌की आवाज आ जाती है। आप कभी पाठ, जप करते हैं। भगवान्‌के भजनमें लगे हैं, मनमें जपनेकी लगन है और आपको कहीं नींद आने लगेगी तो किवाड़ जोरसे पड़ाकसे पटकेगा, जैसे कोई हवा आ गयी हो अथवा कोई हल्ला करेगा तो आपकी नींद खुल जायगी। कोई अचानक ऐसा शब्द होगा तो चट नींद खुल जायगी। यह तो नाम महाराज चेताते हैं, भगवान् चेत कराते हैं कि सोते कैसे हो? नाम जपते हो कि नींद ले रहे हो? भगवान् बड़ी भारी मेहनत करके, आपके ऊपर कृपा करके आपकी निगरानी रखते हैं, आप शरण हो तो जाओ।

तुलसीदासजी महाराज कहते हैं—‘***बिगरी जनम अनेक की सुधरै अबहीं आजु***’ अनेक जन्मोंकी बिगड़ी हुई बात, आज सुधर जाय और आज भी अभी-अभी इसी क्षण, देरीका काम नहीं, क्योंकि ‘***होहि राम को नाम जपु***’ तुम रामजीके होकरके अर्थात् मैं रामजीका हूँ और रामजी मेरे हैं—ऐसा सम्बन्ध जोड़ करके नाम जपो। पर इसमें एक शर्त है—‘***एक बानि करुनानिधान की। सो प्रिय जाकें गति न आन की॥***’ संसारमें जितने कुटुम्बी हैं, उनमें मेरा कोई नहीं है। न धन-सम्पत्ति मेरी है और न कुटुम्ब-परिवार ही मेरा है अर्थात् इनका सहारा न हो। ‘**अनन्यचेताः**

सततम्', '**अनन्याश्चिन्तयन्तो माम्**' केवल भगवान् ही मेरे हैं। मैं औरोंका नहीं हूँ तथा मेरा और कोई नहीं है—ऐसा अपनापन करके साथमें फिर नाम जपो तो उस नामका भगवान्पर असर होता है। परन्तु कइयोंसे सम्बन्ध रखते हैं, धन-परिवारसे सम्बन्ध रखते हैं और नाम लेते हैं तो नाम न लेनेकी अपेक्षा लेना तो श्रेष्ठ है ही और जितना नाम लेता है, उतना तो लाभ होगा ही; परन्तु वह लाभ नहीं होगा, जो लाभ सच्चे हृदयसे अपना सम्बन्ध परमात्माके साथ जोड़कर फिर नाम लेनेवालेको होता है।

'तुलसी तजि कुसमाजु' कुसंगका त्याग करो। कुसंग क्या है ? यह धन हमारा है, सम्पत्ति हमारी है—यह कुसंग है। जो धनके लोभी हैं, भोगोंके कामी हैं, उनका संग कुसंग है। जो परमात्मासे विमुख हैं, उनका संग महान् कुसंग है। वह कुसमाज है, उनसे बचो। नहीं तो महाराज ! थोड़ा-सा कुसंग भी आपकी वृत्तियोंको बदल देगा, एकदम भगवान्से विमुख कर देगा। लोग कहते हैं कि भगवद्भजनमें इतनी ताकत नहीं, जो कुसंग इतना असर कर जाय। वह ताकत कुसंगमें नहीं है भाई, प्रत्युत अपने भीतरमें अनेक तरहके जो विरुद्ध संस्कार पड़े हुए हैं, भगवद्भजनके विरुद्ध संस्कार पड़े हैं। वे संस्कार कुसंगसे उभर जाते हैं, जग जाते हैं। इस वास्ते कुसंगका बड़ा असर पड़ता है। आप भजन करोगे तो वे सब संस्कार नष्ट हो जायँगे, फिर— ***'बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥'*** कभी किसी कारणसे कोई सज्जन कुसंगमें पड़ भी जायँ तो जैसे साँपकी मणि होती है, उसको जहर नहीं लगता। वह तो जहरके ऊपर रखनेसे जहरका शोषण कर लेती है, पर वह खुद जहरीली नहीं होगी। इसी तरहसे आप भजनमें तल्लीन हो जाओगे, तदाकार हो जाओगे तो फिर आपका मन नहीं बदलेगा, आपके ऊपर कुसंगका असर नहीं पड़ेगा। कारण कि आपके अन्तःकरणमें भगवत्-सम्बन्धी संस्कार दृढ़ हो गये, प्रत्युत कुसंगपर आपका असर पड़ेगा, भजनका असर पड़ेगा। परन्तु इतनी शक्ति होनेसे पहले सावधान रहो। कुसंगका त्याग करके और

भगवान्‌के होकर मस्तीसे भगवान्‌के नामका जप करो। चलते-फिरते, उठते-बैठते हर समय करो। इसमें जब मन लग जाता है, फिर छूटता नहीं।

मैंने एक सज्जन देखे हैं। उनके सफेद ही कपड़े थे, पर वे 'राम-राम-राम' करते रहते थे। जैसे चलते-चलते कोई पीछे रह जाता है और फिर दौड़कर आ जाता है, इसी तरहसे वे पहले धीरे-धीरे 'राम-राम-राम' करते थे, फिर बड़ी तेजीसे जल्दी-जल्दी करते थे। रातमें भी उनके पास रहनेका मेरा काम पड़ा है तो वे रातमें भी और दिनमें भी नाम जपते। थोड़ी देर नींद आती, नींद खुलनेपर फिर 'राम-राम-राम'। हर समय ही 'राम-राम-राम'। भोजन करते हैं तो 'राम-राम-राम'। ग्रास लेते हैं तो 'राम-राम-राम'। किसी समय जाकर देखें तो वे भगवान्‌का नाम लेते हुए ही मिलते थे। ऐसी लौ लग जायगी तो फिर नहीं छूटेगी। फिर हाथकी बात नहीं है कि आप छोड़ दें। वह एक ऐसा विलक्षण रस है कि एक बार जो लग जाता है तो फिर वह लग ही जायगा। परमात्मतत्त्व-सम्बन्धी बातें हों, परमात्म-सम्बन्धी नाम हो, भगवान्‌की लीला हो, गुण हो, प्रभाव हो, रहस्य हो—भगवान्‌का जो कुछ भी समझ आ जायगा, उसको आप छोड़ सकोगे नहीं।

कारण क्या है ? आपका सम्बन्ध पहलेसे भगवान्‌के साथ है और संसारके साथ आपका सम्बन्ध है नहीं। अभी भी बचपन, जवानी और वृद्धावस्था—इनका आपके साथ निरन्तर सम्बन्ध कहाँ है ? ये निरन्तर बदलते हैं और निरन्तर रहते हैं तो इनका आपसे साथ नहीं है। बहुत-से लोग मर गये। बहुत-से मर रहे हैं। सभी जा रहे हैं। कोई भी अपने साथमें रहनेवाला नहीं है। पर प्रभु हरदम साथमें रहते हैं। प्रभु कभी हमसे वियुक्त हुए नहीं और हो नहीं सकते। यह जीव ही भगवान्‌से विमुख हुआ है। सभी जीव भगवान्‌को प्यारे हैं, सब भगवान्‌के पैदा किये हुए हैं। इस वास्ते भगवान् जीवको कभी भूलते नहीं हैं—***'सब मम प्रिय सब मम उपजाए।'***

संसारकी कोई भी वस्तु स्थिर नहीं रहती। जो आप रखते हो, नहीं रहता। अनुकूल परिस्थिति रखना चाहते हो, नहीं रहती। धन रखते हो, नहीं रहता। कुटुम्ब रखते हो, नहीं रहता। आप उनका भरोसा करते हो तो विश्वासघात होता है; क्योंकि वे साथ रह सकते ही नहीं। यह क्या है? यह भगवान्‌का निमन्त्रण है, भगवान्‌का आह्वान है, भगवान्‌की बुलाहट है। भगवान् आपको बुला रहे हैं कि तुम कहाँ फँस गये हो? वे तुम्हारे नहीं हैं। तुम देख लो कि ये बेटा-पोता, पड़पोता, माँ, बाप, भाई, सम्बन्धी, मित्र, कुटुम्बी तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करते हैं? ये तुम्हारा साथ देनेवाले नहीं हैं—

संसार साथी सब स्वार्थके हैं,
पक्के विरोधी परमार्थ के हैं।
देगा न कोई दुःख में सहारा,
सुन तू किसी की मत बड़ा प्यारा॥

और बात तू मत सुन, एक नाम ही ले।

उपनिषदोंमें आता है—'**श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः**' बहुत-से आदमियोंको तो भगवत्सम्बन्धी बातें सुननेके लिये भी नहीं मिलतीं। उम्र बीत जाती है, पर सुननेके लिये नहीं मिलतीं। सज्जनो! आपलोगोंको तो मौका मिल गया है। आपलोगोंपर भगवान्‌की कितनी कृपा है कि आप वाणी पढ़ते हैं, सन्तोंके प्रति श्रद्धा है, भावना है—यह कोई मामूली गुण नहीं है। आज आपको इसमें कुछ विशेषता नहीं दीखती, पर है यह बहुत विशेष बात, क्योंकि—

वैष्णवे भगवद्भक्तौ प्रसादे हरिनाम्नि च।
अल्पपुण्यवतां श्रद्धा यथावन्नैव जायते॥

भगवान्‌के प्यारे भक्त, भगवद्भक्ति आदिमें थोड़े पुण्यवालोंकी श्रद्धा नहीं होती। जब बहुत अन्तःकरण निर्मल होता है, तब सन्तोंमें, भगवान्‌की भक्तिमें, प्रसादमें और भगवान्‌के नाममें श्रद्धा होती है। जिनमें कुछ भी

श्रद्धा-भक्ति होती है, यह उनके बड़े भारी पुण्यकी बात है। वे पवित्रात्मा हैं। नहीं तो, उनमें श्रद्धा नहीं बैठती। वह तर्क करेगा, कुतर्क करेगा। वह उनके पास ठहर नहीं सकता।

तुलसी पूरब पाप तें हरि चर्चा न सुहाय।
कै ऊँघे कै उठ चले कै दे बात चलाय॥

सत्संगमें जायगा तो नींद आ जायगी, दूसरी बात कहना शुरू कर देगा अथवा बैठकर चल देगा; परन्तु यदि वह कुछ दिन सत्संगमें ठहर जाय तो उसके भी सत्संग लग जायगा। वह भी भजन करने लग जायगा। फिर वह सत्संग छोड़ेगा नहीं।

एक बात मैंने सुनी है। एक आदमी यों ही हँसी-दिल्लगी उड़ानेवाला था। वह दिल्लगीमें ही कहता है कि ये देखो ये साधु! 'राम, राम, राम, राम, राम' करते हैं तो दूसरे लोग कहते हैं—हाँ भाई! कैसे करते हैं? तो वह फिर कहता है—'राम-राम-राम' ऐसे करते हैं। वह उठकर कहीं भी जाता तो लोग कहते हैं—हाँ बताओ, कैसे करते हैं? तो वह फिर कहता 'राम-राम-राम' ऐसे करते हैं। ऐसे कहते-कहते महाराज, उसकी लौ लग गयी। वह नाम जपने लगा। इस वास्ते—***'भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥'*** किसी तरहसे आप नाम ले तो लो। फिर देखो, इसकी विलक्षणता, अलौकिकता। परन्तु सज्जनो! बिना लिये इसका पता नहीं लगता। जैसे मिठाई जबतक मुखसे बाहर रहे, तबतक उसके मिठासको नहीं जान सकते। मिठाई खानेवाला ही मिठाईके रसको जानता है।

शास्त्रोंसे, सन्तोंसे नाम-महिमा सुन करके हम नाममें यत्किञ्चित् रुचि कर सकते हैं। परन्तु उसका असली रस तब आयेगा, जब आप स्वयं लग जाओगे, और लग जाओगे भीतरसे, हृदयसे; दिखावटीपनसे नहीं अर्थात् लोगोंको दिखानेके लिये नहीं। लोगोंको दिखानेके लिये भजन करता है, वह तो लोगोंका भक्त है, भगवान्‌का नहीं। लोग मेरेको भजनानन्दी समझें,

इस वास्ते दिखाता है तो वह भगवान्‌का भक्त कहाँ ? भगवान्‌का भक्त होगा तो वह भीतरसे कैसे नाम छोड़ सकेगा। एकान्तमें अथवा जन-समुदायमें, वह नामको कैसे छोड़ सकता है ? असली लोभको वह कैसे छोड़ सकता है ? आपके सामने पैसे आ जायँ, रुपये आ जायँ अथवा आपके सामने पड़े हों तो छोड़ सकते हो क्या ? कैसे छोड़ सकते हैं ? ले लोगे ! कूड़े-करकटमें पड़े हुएको भी चट उठा लोगे तो जो नामका प्रेमी है, वह नाम छोड़ देगा, यह कैसे हो सकता है ? वह एक क्षणभर भी नामका वियोग कैसे सह सकता है ?

नारदजी महाराजने भक्ति-सूत्रमें लिखा है—‘**तदर्पिताखिलाचारिता तद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति ।**’ अपना सब कुछ भगवान्‌के अर्पण तो कर देता है, पर भगवान्‌की, उनके नामकी थोड़ी-सी भूल हो जाय तो वह व्याकुल हो जाता है। जैसे, मछलीको जलसे दूर करनेपर वह छटपटाने लगती है और कुछ देर रखो, तो वह मर जाय, वह आरामसे नहीं रह सकती। ऐसे ही ‘**तद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति**’ नामकी—भगवान्‌की विस्मृति होनेपर परम व्याकुलता हो जायगी। उसको छोड़ नहीं सकते। भगवान्‌की स्मृतिका त्याग नहीं कर सकते।

भागवतके एकादश स्कन्धमें नव योगेश्वरोंके प्रसंगमें आता है कि कोई भक्तसे कहे कि आधे क्षणके लिये भी तू भगवान्‌की स्मृति छोड़ दे तो तेरेको त्रिलोकीका राज्य दे देंगे तो वह कहता है—तेरे किसी वैभवके लिये भी आधे क्षणके लिये मैं भगवान्‌को छोड़ नहीं सकता। उसके सामने वैभव कुछ नहीं है। यह है क्या चीज ? यह तो क्षणभंगुर है और भगवान् हैं निरन्तर रहनेवाले। इस वास्ते किसी लोभमें आकर भी वह भगवान्‌के नामको कैसे छोड़ सकता है। अगर नाम छूट जाता है तो नामकी कीमत नहीं समझी है। नामका महत्त्व उसके ध्यानमें नहीं आया। तात्पर्य यह हुआ कि भगवान्‌की भूल होती नहीं। भूल कैसे हो ? ‘***भूले नाय बने दयानिधि भूले नाय बने ।***’ भूले बनता नहीं। कैसे भूल जाय, भूल सकता नहीं।

जिसको यह रस लग गया तो लग ही गया। जैसे, मक्खी हर एक जगह बैठ जाती है और उड़ जाती है। मक्खी पहले तो अंगारपर बैठती ही नहीं और कभी बैठ जाय तो फिर उठती नहीं कभी। फिर धुआँ ही उठेगा, वह नहीं उठेगी। ऐसे ही यह मन जबतक भगवान्‌में, भगवान्‌के नाममें नहीं लगा है, तबतक यह जगह-जगह भटकता रहता है, परन्तु जब यह भगवान्‌में लग जायगा तो फिर जय रामजीकी……… ! फिर तो बस, खतम ! फिर उठ नहीं सकता। जबतक मन उठता है, तबतक मन नहीं लगा है, भजन नहीं हुआ है। लोग कहते हैं—'हमने बहुत भजन किया, नाम-जप किया।' बहुत किया क्या ? अभी नाम शुरू ही नहीं हुआ। असली भजन शुरू नहीं हुआ है। शुरू होनेपर छूट जाय, यह आपके हाथकी बात नहीं। आप विचार करो, मरनेके बाद हड्डियोंमें भगवान्‌का नाम आता है तो नाम कैसे छूट सकता है।

मारवाड़में एक फूली बाई जाटणी हुई है। वह भगवान्‌का नाम लेती थी। उसका काम था थेपड़ी थापनेका। वह गोबरकी थेपड़ी थापती थी। किसीने उसकी थेपड़ी ले ली तो वह उसके यहाँ गयी और कही—तूने मेरी थेपड़ी ले ली। उसने कहा—मैंने नहीं ली। अगर मैंने ली है तो उसकी क्या पहचान है तेरे पास ? फूली बाईने कहा—थेपड़ी लगाओ कानसे। उसने कानसे लगाया तो उसमें 'राम-राम-राम' की ध्वनि निकल रही थी। थेपड़ीमें नाम-जप हो रहा था। उसने आश्चर्यसे कहा—इसमें तो 'राम-राम-राम' हो रहा है। फूली बाईने कहा—यही तो है हमारी पहचान ! ऐसी थी फूली बाई ! तो जो सच्चे हृदयसे नाम ले, उसकी कितनी महिमा है।

'यह डोकरी (बुढ़िया) भगवान्‌की भक्ता है'—ऐसा सुन करके एक बार जोधपुर दरबार वहाँ चले गये, जहाँ फूली बाई रहती थी। वहाँ जाकर देखा तो अपने प्रत्येक फौजीके सामने फूली बाई खड़ी है और फौजीको वही बाजरेका सोगरा, गँवार फलियोंका साग भोजन करा रही है। यह

देखकर राजा बड़े खुश हुए और उसको बुलाकर रनिवासमें इस वास्ते भेजा कि रानियोंको सत्संग नहीं मिलता। अतः यह बाई वहाँ चली जाये तो कुछ सत्संग हो जाय। बेचारी फूली बाईका ऊँचा-ऊँचा तो वह घाघरिया, अपना वह ग्रामीण वेश था। वह वैसे ही रनिवासमें चली गयी। उसको देखकर सब रानियाँ हँस पड़ीं कि क्या तमाशा आयी है। तो फूली बाई अपनी सीधी-सादी भाषामें बोली—

'ए गहणो गांठो तन की शोभा, काया काचो भांडो।
फूली कहे थे बैठी कँई राम भजो ए रांडो॥'

ये सुन्दर गहने पहन करके थे (तुम) बैठी हो, 'राम-राम' क्यों नहीं करो। क्या करोगी ? ***'काया काचो भांडो'***, न जाने कब फूट जाय। ऐसेमें बैठकर थे भजन नहीं करो तो थे क्या करो राँडो, बैठी 'राम-राम' करो न ? फूली बाईको यह संकोच नहीं है कि मैं कैसे बोलती हूँ ? क्या कहती हूँ ? उसकी तो यह सीधी-सादी वाणी है। वह भगवान्‌के भजनमें रात-दिन लगी हुई है तो उसको याद करनेसे शान्ति मिलती है। महाराज ! हृदयका पाप दूर हो जाय याद करनेसे।

कारण क्या है ? भगवान्‌का नाम लिया है। भगवान्‌के चरणोंकी शरण हो गयी है।

'बड़े सेयां बड़ होत है, ज्यूं बामन भुज दण्ड।
तुलसी बड़े प्रताप ते दण्ड गयउ ब्रह्माण्ड॥'

वामनभगवान् छोटे-से बनकर बलिसे पृथ्वी माँगने गये और कहे—'मैं तो मेरे पैरोंसे तीन कदम पृथ्वी लूँगा।' बलि कहता है—'अरे ब्राह्मण ! मेरे पास आकरके थोड़ा क्या लेता है ? और ले ले।' वामन-भगवान्‌ने कहा—'ना, मैं तीन कदम ही लूँगा।' अब वे तीन कदम नापने लगे महाराज ! तो सबसे बड़ा लम्बा अवतार हुआ यह ! ब्रह्मचारीके हाथमें दण्ड होता है पलाशका। वामन भगवान् जितने ऊँचे थे, तो उनका दण्ड भी उतना ही ऊँचा था। बड़ी-से-बड़ी लाठी कानतक होती है। अब

वह इतनी छोटी लाठी हाथमें हो और स्वयं इतने बड़े हो गये कि वह दण्ड तो वामनभगवान्‌के दाँत कुचरनेमें भी काम आता। इतने छोटे घोचेका क्या करेंगे? तो कहते हैं ***'सन्तदास लकड़ी बढ़ी बिन कूंपल बिन पात।'*** न कोंपल निकली, न पत्ता निकला और लकड़ी बढ़ गयी। क्यों बढ़ गयी। ***'बड़ सेयां बड़ होत है'*** वह थी सूखी लकड़ी ही, पर हाथमें किसके थी? ऐसे ही सज्जनो! आप और हम हैं साधारण; परन्तु भगवान्‌के चरणोंमें लग जायँ, नाममें लग जायँ, भगवान्‌के चिन्तनमें लग जायँ तो गुजराती भाषामें एक पद आता है—***'छोटा साउथी, सबथी मोटा थाय, थाय छे हरि भजन किए।'*** भगवान्‌का भजन करनेवाला 'छोटा साउथी' सबसे छोटा 'सबथी मोटा थाय छे', सबसे बड़ा हो जाता है; क्यों हो जाता है? उसने भगवान्‌का सहारा ले लिया है। भगवान्‌का नाम ले लिया है। भगवान्‌में लग गया है। इस वास्ते वह छोटा नहीं है, साधारण नहीं है।

हमने एक सन्तकी बात सुनी है। इससे पहले जमानेमें सेकेंड क्लासका रिजर्व होता था। एक सन्तको कहीं जाना था तो गृहस्थ भाइयोंने उनको सेकेंड क्लासमें बैठा दिया। एक सीटपर वे बैठ गये। उनके सामने एक मुसलमान बैठा हुआ था। उसका जब नमाजका समय हुआ तो वह अपना अँगोछा बिछाकर नमाज पढ़ने लगा तो सामने सीटपर बैठे हुए सन्त उठकर खड़े हो गये। जबतक वह नमाज पढ़ता रहा, तबतक बाबाजी खड़े रहे और जब वह मुसलमान बैठ गया, तब बाबाजी भी बैठ गये। मुसलमानने पूछा—'महाराज! आप खड़े क्यों हुए?' तो बाबाजीने मुसलमानसे पूछा—'तुम खड़े क्यों हुए?' मुसलमानने कहा—'मैं परवरदिगारकी बन्दगीमें था' तो सन्तने कहा—'मैं तुम्हारी बन्दगीमें था।' जिस वक्त कोई प्रभुको याद करता है, उस समय उस मनुष्यको मामूली नहीं समझना चाहिये; क्योंकि वह उस समय भगवान्‌के साथ है! तुम उस प्रभुको याद कर रहे थे तो मैं तुम्हारी हाजिरीमें खड़ा था।

कोई जब भगवान्‌से प्रार्थना करता है, भगवान्‌का भजन करता है तो

मनुष्य चाहे किसी भाषामें प्रार्थना करे; क्योंकि अपनी-अपनी भाषामें अपने-अपने इष्टका नाम अलग-अलग है। परमात्मा तो एक ही है। उसके साथ जिसका सम्बन्ध जुड़ा है तो क्या वह साधारण मनुष्य है ? जैसे, दूसरे मनुष्य होते हैं, वैसे ही वह रहा ? नहीं।

जैसे, लोगोंमें यह देखा जाता है कि राजकीय कोई बड़ा अधिकारी होता है तो लोगोंपर उसका असर पड़ता है कि ये बड़े अफसर आ गये, ये बड़े मिनिस्टर आ गये। ऐसे ही जो भगवान्‌में लगे हैं, वे बड़े राजाके हैं, जिससे बड़ा कोई है ही नहीं—**'न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥'** (गीता ११ । ४३) वह उस भगवान्‌का प्यारा है, जिसके लिये स्वयं भगवान् कहते हैं—***'भगत मेरे मुकुट मणि ।'*** भगवान् स्वयं जिनके लिये इतना आदर देते हैं, उस सन्तके अगर हमको दर्शन हो जायँ तो कितना अहोभाग्य है हमारा ! परन्तु मनुष्य उसको पहचानता नहीं। सन्तोंका पता नहीं लगता। सच्ची बात है। सन्तोंका क्या पता लगे ?

महाराज, क्या बतावें ? विचित्र, विलक्षण-विलक्षण सन्त होते हैं और साधारण व्यक्ति-जैसे पड़े रहते हैं। पता ही नहीं लगता उनका कि ये क्या हैं; क्योंकि बाहरसे तो वे मामूली दीखते हैं—

'सन्तोंकी गत रामदास जगसे लखी न जाय।
बाहर तो संसार-सा भीतर उलटा थाय ॥'

'ऐसे निराले सेठको वैसा ही बिरला जानता' वह इतना मालदार है, उसको तो वैसा ही कोई बिरला जानता है, हर एक नहीं जानता। हर एकको उनकी पहचान नहीं होती। इस प्रकार सज्जनो ! जो नाम हम सबके लिये सुलभ हैं, ***'सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू ॥'*** सुमिरन करनेमें सबको सुलभ है, चाहे वह किसी वर्णका हो, किसी जातिका हो, किसी आश्रमका हो, किसी देशका हो, किसी वेशमें हो, कोई भी क्यों न हो। वह भी अगर भगवान्‌के नाममें

लग जाय, तो नाम सभीको सुख देनेवाला है— ***'सुखद सब काहू' 'लोक लाहु परलोक निबाहू'*** लोक-परलोकमें लाभ देनेवाला है, सब तरहसे निर्वाह करानेवाला है।

गोस्वामीजी कहते हैं—***'भरोसो जाहि दूसरो सो करो'*** किसीको दूसरे किसीका भरोसा हो तो वह किया करे। मेरे तो— ***'मोको तो रामको नाम कलपतरु कलि कल्यान फरो'*** रामजीका नामरूपी कल्पतरु कलियुगमें कल्याणरूपसे फलीभूत हो गया। इस कल्पतरुसे जो चाहे, सो ले लो। ***'मेरे तो माय-बाप दोउ आखरहौं, सिसु-अरनि अरो'*** मैं बच्चा हूँ, अड़ जाऊँगा तो वह चीज लेकर ही छोड़ूँगा। जैसे माँ-बापके सामने बच्चा अड़ जाय, रोने लग जाय तो जो खिलौना चाहे, वह ले ही लेगा। ऐसे ही मैं शिशु हूँ, अड़ जाता हूँ तो राम-नामसे सब ले लेता हूँ। ऐसा कहते-कहते गोस्वामीजी महाराज हद कर देते हैं ***'संकर साखि जो राखि कहौं'*** मनमें बात तो दूजी हो और बनाकर दूजी कहता हूँ तो भगवान् शंकर साक्षी हैं। शंकर भगवान् हमारे गवाह हैं। ***'तौ जरि जीह गरो'*** जीभ जल जाओ, गल जाओ भले ही परन्तु ***'अपनो भलो राम-नामहि ते तुलसिहि समुझि परो।'***

शंकर भगवान्‌की गवाही क्यों दी ? एक तो शंकर राम-नाम लेनेवाले हैं। दूसरी बात, जिसको गवाही दिया जाय, उसको पूछते हैं—देखो भाई ! सच्ची-सच्ची गवाही देना, तो वह कहता है—हाँ सच्ची कहता हूँ। पूछनेवाला पूछता है—बिलकुल सच्ची ? हाँ, बिलकुल सच्ची ? अगर सच्ची ! तो उठाओ गङ्गाजली। ऐसे गोस्वामीजी शंकर भगवान्‌से कहते हैं— 'महाराज ! सच्ची गवाही देना, आपके सिरपर गङ्गाजी हैं।'

सगरामदासजी कवि कहते हैं—

(१)

नरतन दीन्हो रामजी सतगुरु दीन्हो ज्ञान।
ये घोड़ा हाको अबे ओ आयो मैदान॥

ओ आयो मैदान बाग करडी कर सावो।
हिरदे राखो ध्यान राम रसनासों गावो॥
कुण देखाँ सगराम कहे आगे काढ़े कान।
नरतन दीन्हो रामजी सतगुरु दीन्हो ज्ञान॥

(२)

कहे दास सगराम बड़गड़े घालो घोड़ा।
भजन करो भरपूर रह्या दिन बाकी थोड़ा॥
थोड़ा दिन बाकी रह्या कद पोंछोला ठेट।
अध बीचमें बासो बसो तो पड़सो किणरे पेट॥
पड़सो किणरे पेट पड़ेगा भारी फोड़ा।
कहे दास सगराम बड़गड़े घालो घोड़ा॥

तात्पर्य यह हुआ कि मनुष्य-शरीर पा करके खूब भजन कर लो; नहीं तो कुत्तीके, गधीके पेटमें जाना पड़ेगा। इन माताओंका दूध पीकर क्या कुत्तीका दूध पीओगे ? क्या गधीका दूध पीओगे ? इस वास्ते भाइयो ! बहनो ! हमलोगोंपर सन्तोंने कितनी कृपा करके हमको भगवान्‌का नाम बता दिया है। अब तो चेत करके रात और दिन 'राम-राम-राम-राम-राम' करो। रात-दिन भजनमें लग जाओ।

भाइयो ! ज़बानकी सावधानी रखो। जबानसे सत्य बोलो, झूठ मत बोलो। सावधानीके साथ इसका हरदम ख्याल रखो और हरदम भगवान्‌का नाम लो। झूठ बोलनेसे जिह्वामें शक्ति नहीं होती। जबानमें शक्ति न होनेपर नाम लेनेपर भी जल्दी सिद्धि नहीं होती।

'जिह्वा दग्धा परान्नेन' पराया हक खानेसे जीभ जल गयी। **'हस्तौ दग्धौ प्रतिग्रहात्'** दूसरोंकी चीज लेनेसे हाथ जल गये। **'परस्त्रीभिर्मनो दग्धम्'** पर-स्त्रियोंमें मन जानेसे मन जल गया। **'कथं सिद्धिर्वरानने।'** तो सिद्धि कैसे हो ? ताकत न जीभमें रही, न हाथमें रही और न मनमें रही। इस वास्ते भाइयो ! बहनो ! बड़ी सावधानीसे बर्ताव करो और

भगवान्‌का नाम लो।

लोग बड़े-बड़े दुःख पाते हैं और कहते हैं—'क्या करें चिन्ता नहीं मिटती, हमारा काम नहीं बनता।' अरे भाई, राम-नाम लो न ? मैंने सन्तोंसे सुना है कि राम-नाम है तोपका गोला—*'जैसे गोला तोप का करत जात मैदान'* जैसे तोपका गोला जहाँ जाता है, वहाँ मैदान हो जाता है, ऐसे ही यह राम-नाम है। यह तो प्रत्यक्ष बात है कि जब मनमें चिन्ता आये तो आधा घंटा, एक घंटा नाम जपो, चिन्ता मिट जायगी।

—****—

नाम-जपकी विधि

नाम-जपकी खास विधि क्या है ? खास विधि है कि भगवान्‌के होकर भगवान्‌के नामका जप करें, ***'होहि राम को नाम जपु तुलसी तजि कुसमाजु'।*** अब थोड़ी दूसरी बात बताते हैं। भगवान्‌के नामका जप करो; पर जपके साथमें प्रभुके स्वरूपका चिन्तन भी होना चाहिये। जैसे—'गङ्गाजी'का नाम लेते हैं तो गङ्गाजीकी धारा दिखती है कि ऐसे बह रही है। 'गौमाता'का नाम लेते हैं तो गायका रूप दिखता है। ऐसे 'ब्राह्मण'का नाम लेते हैं तो ब्राह्मणरूपी व्यक्ति दिखता है। मनमें एक स्वरूप आता है। ऐसे 'राम' कहते ही धनुषधारी राम दीखने चाहिये मनसे। इस प्रकार नाम लेते हुए मनसे भगवान्‌के स्वरूपका चिन्तन करो। यह खास विधि है। पातञ्जलयोगदर्शनमें लिखा है—**'तज्जपस्तदर्थभावनम्'**, **'तस्य वाचकः प्रणवः'** भगवान्‌के नामका जप करना और उसके अर्थका चिन्तन करना अर्थात् नाम लेते जाओ और उसको याद करते जाओ।

श्रीकृष्णके भक्त हों तो उनके चरणोंकी शरण होकर, **'श्रीकृष्णः शरणं मम'** इस मन्त्रको जपते हुए साथ-साथ स्वरूपको याद करते जाओ। नाम-जपकी यह खास विधि है। एक विधि तो उसके होकर नाम जपना और दूसरी विधि—नाम जपते हुए उसके स्वरूपका ध्यान करते रहना। कहीं भूल होते ही 'हे नाथ ! हे नाथ !!' पुकारो। 'हे प्रभो !

बचाओ, मैं तो भूल गया। मेरा मन और जगह चला गया, हे नाथ! बचाओ।' भगवान्‌से ऐसी प्रार्थना करो तो भगवान् मदद करेंगे। उनकी मददसे जो काम होगा, वह काम आप अपनी शक्तिसे कर नहीं सकोगे। इस वास्ते भगवान्‌के नामका जप और उनके स्वरूपका ध्यान—ये दोनों साथमें रहें।

'ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्।'

(गीता ८। १३)

'ॐ' इस एक अक्षरका उच्चारण करे और मेरा स्मरण करे। यह जगह-जगह बात आती है। इस वास्ते भगवान्‌के नाम-जपके साथ भगवान्‌के स्वरूपकी भी याद रहे।

नाम-जप दिखावटीपनमें न चला जाय अर्थात् मैं नाम जपता हूँ तो लोग मेरेको भक्त मानें, अच्छा मानें, लोग मेरेको देखें—यह भाव बिलकुल नहीं होना चाहिये। यह भाव होगा तो नामकी बिक्री हो जायगी। नामका पूरा फल नहीं मिलेगा; क्योंकि आपने नामको मान-बड़ाईमें खर्च कर दिया। इस वास्ते दिखावटीपन नहीं होना चाहिये नाम-जपमें। नाम-जप भीतरसे होना चाहिये—लगनपूर्वक। लौकिक धनको भी लोग दिखाते नहीं। उसको भी तिजोरीमें बंद रखते हैं, तो लौकिक धन-जैसा भी यह धन नहीं है क्या? जो लोगोंको दिखाया जाय। लोगोंको पता लगे तो क्या भजन किया? गुप्तरीतिसे करे, दिखावटीपन बिलकुल न आवे। नाम-जप भीतर-ही-भीतर करते रहें। एकान्तमें करते रहें, मन-ही-मन करते रहें और मन-ही-मनसे पुकारें, लोगोंको दिखानेके लिये नहीं। लोग देख लें तो उसमें शर्म आनी चाहिये कि मेरी गलती हो गयी। लोगोंको पता लग गया। हमें एक महात्मा मिले थे। उन्होंने एक बात कही।

प्रह्लादजीको इतना कष्ट क्यों पाना पड़ा? प्रह्लादजीने अपना भजन प्रकट कर दिया। अगर वे प्रकट न करते तो उनको इतना कष्ट क्यों पाना

पड़ता ? इस वास्ते अपना भजन प्रकट न करें। किसीको पता ही न होने दें कि यह भगवान्‌का भजन करता है। बहनों-माताओंको चाहिये कि वे ऐसी गुप्तरीतिसे भगवान्‌के भजनमें लग जायँ। देखो, गुप्तरीतिसे किया हुआ भजन बड़े महत्त्वका होता है। पाप भी गुप्त किये हुए बड़े भयंकर होते हैं। भजन भी बड़ा लाभदायक होता है। गुप्त दिया हुआ दान भी बड़ा लाभदायक है। गुप्त दान कौन-सा है ? घरवालोंसे छिपाकर देना चोरी है, गुप्त दान नहीं है। गुप्त दान कौन-सा है ? जिसके घरमें चला जाय, उसे पता नहीं चले कि कहाँसे आया है ? किसने दिया है ? देनेवालेका पता न लगे, यह गुप्त दान होता है। घरवालोंसे छिपाकर देना चोरी है। चोरीका पाप होता है।

एक बार सुबहके प्रवचनमें मैंने कह दिया कि गरीबोंकी सेवा करो। तो एक भाई बोले—गरीबोंकी सेवा करते हैं तो गरीब तंग कर देते हैं महाराज ! तो मैंने कहा—सेवा इस ढंगसे करो कि उन्हें मालूम न हो कि किसने सेवा की। वह तो आपकी सेवा है, नहीं तो लोगोंमें झंडा फहराते हैं कि हम देते हैं, देते हैं। भीड़ बहुत हो जायगी, लोग लूट लेते हैं, तंग करते हैं । यह सेवाका भाव नहीं है। केवल वाह-वाह लेनी है और कुछ नहीं है।

भीतरका भाव हो जाय कि इनके घर कैसे चीज पहुँचे ? किस तरहसे इनकी सहायता हो जाय। कैसे गुप्त दिया जाय, तो उस दानका माहात्म्य है। ऐसे ही गुप्तरीतिसे भजन हो। भगवान्‌के नामका जप भीतर-ही-भीतर हो। नामजप भीतरसे नहीं होता है तो बोलकर करो, कोई परवाह नहीं; पर भाव दिखावटीपनका नहीं होना चाहिये। कोई देख भी ले, तो वह इतना दोष नहीं है, प्रत्युत दिखावेका भाव महान् दोष है। आप नित्य-निरन्तर भजनमें लग जाओ। कहीं कोई देख भी ले तो सावधान हो जाओ। उसके लिये यह नहीं कि हमारा भजन ही बंद हो जाय।

(१) भगवान्‌के होकर भजन करें, (२) भगवान्‌का ध्यान करते हुए भजन करें, (३) गुप्तरीतिसे करें, (४) निरन्तर करें, क्योंकि बीचमें छूटनेसे भजन इतना बढ़िया नहीं होता। निरन्तर करनेसे एक शक्ति पैदा होती है। जैसे, बहनें-माताएँ रसोई बनाती हैं ? तो रसोई बनावें तो दस-पंद्रह मिनट बनाकर छोड़ दें, फिर घंटाभर बादमें शुरू करें। फिर थोड़ी देर बनावें, फिर घंटाभर ठहरकर करने लगें। इस प्रकार करनेसे क्या रसोई बन जायगी ? दिन बीत जायगा, पर रसोई नहीं बनेगी। लगातार किया जाय तो चट बन जायगी। ऐसे ही भगवान्‌का भजन लगातार हो, निरन्तर हो, छूटे नहीं, रात-दिन, सुबह-शाम कभी भी छूटे नहीं। नारदजी महाराज भक्ति-सूत्रमें लिखते हैं—'**तदर्पिताखिलाचारिता तद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति**' सब कुछ भगवान्‌के अर्पण कर दे, भगवान्‌को भूलते ही परम व्याकुल हो जाय। जैसे मछलीको जलसे बाहर कर दिया जाय तो वह तड़फड़ाने लगती है। इस तरहसे भगवान्‌की विस्मृतिमें हृदयमें व्याकुलता हो जाय। भगवान्‌को भूल गये, गजब हो गया ! उसकी विस्मृति न हो। लगातार उसकी स्मृति रहे और प्रार्थना करे—'हे भगवान् ! मैं भूलूँ नहीं, हे ! नाथ ! मैं भूलूँ नहीं।' ऐसा कहता रहे और निरन्तर नाम-जप करता रहे।

(५) इसमें एक बात और खास है—कामना न करे अर्थात् मैं माला फेरता हूँ, मेरी छोरीका ब्याह हो जाय। मैं नाम जपता हूँ तो धन हो जाय, मेरे व्यापारमें नफा हो जाय। ऐसी कोई-सी भी कामना न करे। यह जो संसारकी चीजोंकी कामना करना है यह तो भगवान्‌के नामकी बिक्री करना है। इससे भगवान्‌का नाम पुष्ट नहीं होता, उसमें शक्ति नहीं आती। आप खर्च करते रहते हो, मानो हीरोंको पत्थरोंसे तौलते हो ! भगवान्‌का नाम कहेंगे तो धन-संग्रह हो जायगा। नहीं होगा तो क्या हो जायगा ? मेरे पोता हो जाय। अब पोता हो जाय। अब पोता हो गया तो क्या ? नहीं हो गया तो क्या ? एक विष्ठा पैदा करनेकी मशीन पैदा

हो गयी, तो क्या हो गया ? नहीं हो जाय तो कौन-सी कमी रह गयी ? वह भी मरेगा, तुम भी मरोगे ! और क्या होगा ? पर इनके लिये भगवान्‌के नामकी बिक्री कर देना बहुत बड़ी भूल है। इस वास्ते ऐसी तुच्छ चीजोंके लिये, जिसकी असीम, अपार कीमत है, उस भगवन्नामकी बिक्री न करें, सौदा न करें और कामना न करें। नाम महाराजसे तो भगवान्‌की भक्ति मिले, भगवान्‌के चरणोंमें प्रेम हो जाय, भगवान्‌की तरफ खिंच जायँ यह माँगो। यह कामना नहीं है; क्योंकि कामना तो लेनेकी होती है और इसमें तो अपने-आपको भगवान्‌को देना है। आपका प्रेम मिले, आपकी भक्ति मिले, मैं भूलूँ ही नहीं—ऐसी कामना खूब करो।

सन्तोंने भगवान्‌से भक्ति माँगी है। अच्छे-अच्छे महात्मा पुरुषोंने भगवान्‌के चरणोंका प्रेम माँगा है—

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु॥

भगवान् शंकर माँगते हैं—

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥

तो उनके कौन-सी कमी रह गयी ? पर यह माँगना सकाम नहीं है। तीर्थ, दान आदिके जितने पुण्य हैं, उन सबका एक फल माँगे कि भगवान्‌के चरणोंमें प्रीति हो जाय। हे नाथ ! आपके चरणोंमें प्रेम हो जाय, आकर्षण हो जाय। भगवान् हमें प्यारे लगें, मीठे लगें। यह कामना करो। यह कामना सांसारिक नहीं है।

भगवान्‌का नाम लेते हुए आनन्द मनाओ, प्रसन्न हो जाओ कि मुखमें भगवान्‌का नाम आ गया, हम तो निहाल हो गये ! आज तो भगवान्‌ने विशेष कृपा कर दी, जो नाम मुखमें आ गया। नहीं तो मेरे-जैसेके लिये भगवान्‌का नाम कहाँ ? जिनके याद करनेमात्रसे मङ्गल

हो जाय ऐसे जिस नामको भगवान् शंकर जपते हैं—

तुम्ह पुनि राम राम दिन राती। सादर जपहु अनग आराती॥

वह नाम मिल जाय हमारेको। कलियुगी तो हम जीव और राम-नाम मिल जाय तो बस मौज हो गयी, भगवान्‌ने विशेष ही कृपा कर दी। ऐसी सम्मति मिल गयी, हमारेको भगवान्‌की याद आ गयी। भगवान्‌की बात सुननेको मिली है; भगवान्‌की चर्चा मिली है, भगवान्‌का नाम मिला है, भगवान्‌की तरफ वृत्ति हो गयी है—ऐसे समझकर खूब आनन्द मनावें, खूब खुशी मनावें, प्रसन्नता मनावें।

एक बात और विलक्षण है! उसपर आप ध्यान दें। बहुत ही लाभकी बात है, (६) जब कभी भगवान् अचानक याद आ जायँ, भगवान्‌का नाम अचानक याद आ जाय, भगवान्‌की लीला अचानक याद आ जाय, उस समय यह समझे कि भगवान् मेरेको याद करते हैं। भगवान्‌ने अभी मेरेको याद किया है। नहीं तो मैंने उद्योग ही नहीं किया, फिर अचानक ही भगवान् कैसे याद आये? ऐसा समझकर प्रसन्न हो जाओ कि मैं तो निहाल हो गया। मेरेको भगवान्‌ने याद कर लिया। अब और काम पीछे करेंगे। अब तो भगवान्‌में ही लग जाना है; क्योंकि भगवान् याद करते हैं, ऐसा मौका कहाँ पड़ा है? ऐसे लग जाओ तो बहुत ज्यादा भक्ति है। जब अंगद रवाना हुए और उनको पहुँचाने हनुमान्‌जी गये तो अंगदने कहा—*'बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि'* याद कराते रहना रामजीको। तात्पर्य जिस समय अचानक भगवान् याद आते हैं, उस समयको खूब मूल्यवान् समझकर तत्परतासे लग जाओ। इस प्रकार छः बातें हो गयीं।

गुप्त अकाम निरन्तर, ध्यान-सहित सानन्द।
आदर जुत जप से तुरत, पावत परमानन्द॥

कई भाई कह देते हैं, हम तो खाली राम-राम करते हैं। ऐसा मत समझो। यह राम-नाम खाली नहीं होता है? जिस नामको शंकर जपते

हैं, सनकादिक जपते हैं, नारदजी जपते हैं, बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, संत-महात्मा जपते हैं, वह नाम मेरेको मिल गया, यह तो मेरा भाग्य ही खुल गया है। ऐसे उसका आदर करो। जहाँ कथा मिल जाय, उसका आदर करो। भगवान्‌के भक्त मिल जायँ, उनका आदर करो। भगवान्‌की लीला सुननेको मिल जाय, तो प्रसन्न हो जाओ कि यह तो भगवान्‌ने बड़ी कृपा कर दी। भगवान् मानो हाथ पकड़कर मेरेको अपनी तरफ खींच रहे हैं। भगवान् मेरे सिरपर हाथ रखकर कहते हैं—'बेटा ! आ जा।' ऐसे मेरेको बुला रहे हैं। भगवान् बुला रहे हैं—इसकी यही पहचान है कि मेरेको सुननेके लिये भगवान्‌की कथा मिल गयी। भगवान्‌की चर्चा मिल गयी। भगवान्‌का पद मिल गया। भगवत्सम्बन्धी पुस्तक मिल गयी। भगवान्‌का नाम देखनेमें आ गया।

मालाके बिना अगर नाम-जप होता हो तो मालाकी जरूरत नहीं। परन्तु मालाके बिना भूल बहुत ज्यादा होती हो तो माला जरूर रखनी चाहिये। मालासे भगवान्‌की यादमें मदद मिलती है।

माला मनसे लड़ पड़ी, तूँ नहिं बिसरे मोय।
बिना शस्त्रके सूरमा लड़ता देख्या न कोय॥

बिना शस्त्रके लड़ाई किससे करें ! यह माला शस्त्र है भगवान्‌को याद करनेका ! भगवान्‌की बार-बार याद आवे, इस वास्ते भगवान्‌की यादके लिये मालाकी बड़ी जरूरत है। निरन्तर जप होता है तो मालाकी कोई जरूरत नहीं, फिर भी माला फेरनी चाहिये, माला फेरनेकी आवश्यकता है।

दूसरी आवश्यकता है—जितना नियम है उतना पूरा हो जाय, उसमें कमी न रह जाय उसके लिये माला है। माला लेनेसे एक दोष भी आता है। वह यह है कि आज इतना जप पूरा हो गया, बस अब रख दो माला। ऐसा नहीं करना चाहिये। भगवद्भजनमें कभी संतोष न करे। कभी पूरा न माने। धन कमानेमें पूरा नहीं मानते। पाँच रुपये रोजाना पैदा होते हैं

जिस दुकानमें, उस दुकानमें सुबहके समयमें पचास रुपये पैदा
गये तो भी दिनभर दुकान खुली रखेंगे। अब दस गुणी पैदा हो ग
तो भी दुकान बंद नहीं करेंगे। परन्तु भगवान्‌का भजन, नियम प
हो जाय तो पुस्तक भी समेटकर रख देंगे, माला भी समेटकर रख दें
क्योंकि आज तो नित्य-नियम हो गया। यह बड़ी गलती होती है
मालासे यह गलती न हो जाय कहीं कि इतनी माला हो गयी, अ
बंद करो। इसमें तो लोभ लगना चाहिये कि माला छोड़ूँ ही नह
ज्यादा-से-ज्यादा करता रहूँ।

'कल्याण'में एक लेख आया था—एक गाँवमें रहनेवाले स्त्री-पुरु
थे। गँवार थे बिलकुल। पढ़े-लिखे नहीं थे। वे मालासे जप कर
तो एक पावभर उड़दके दाने अपने पास रख लेते। एक माला पू
होनेपर एक दाना अलग रख देते। ऐसे दाने पूरे होनेपर कहते कि मैं
पावभर भजन किया है। स्त्री कहती कि मैंने आधा सेर भजन किय
आधा सेर माला भजन किया। उनके यही संख्या थी। तो किसी तर
भगवान्‌का नाम जपे। अधिक-से-अधिक सेर, दो सेर भजन करो
यह भी भजन करनेका तरीका है। जब आप लग जाओगे तो तरीक
समझमें आ जायगा।

जैसे सरकार इतना कानून बनाती है फिर भी सोच करके
कुछ-न-कुछ रास्ता निकाल ही लेते हो। भजनकी लगन होगी तो क्य
रास्ता नहीं निकलेगा। लगन होगी तो निकाल लोगे। सरकार तो कानूनोंमें
जकड़नेकी कमी नहीं रखती; फिर भी आप उससे निकलनेकी कमी नह
रखते। कैसे-न-कैसे निकल ही जाते हैं। तो संसारसे निकलो भाई। य
तो फँसनेकी रीति है।

भगवान्‌के ध्यानमें घबराहट नहीं होती, ध्यानमें तो आनन्द आता है
प्रसन्नता होती है; पर जबरदस्ती मन लगानेसे थोड़ी घबराहट होती है त
कोई हर्ज नहीं। भगवान्‌से कहो—'हे नाथ! मन नहीं लगता।' कह

ही रहो, कहते ही रहो। एक सज्जनने कहा था—कहते ही रहो 'व्यापारीको ग्राहकके अगाड़ी और भक्तको भगवान्‌के अगाड़ी रोते ही रहना चाहिये कि क्या करें बिक्री नहीं होती, क्या करें पैदा नहीं होती।' ऐसे भक्तको भगवान्‌के अगाड़ी 'क्या करें, महाराज ! भजन नहीं होता है, हे नाथ ! मन नहीं लगता है।' ऐसे रोते ही रहना चाहिये। ग्राहकके अगाड़ी रोनेसे बिक्री होगी या नहीं होगी, इसका पता नहीं, पर भगवान्‌के अगाड़ी रोनेसे काम जरूर होगा। यह रोना एकदम सार्थक है।

सच्ची लगन आपको बतायेगी कि हमारे भगवान् हैं और हम भगवान्‌के हैं। यह सच्चा सम्बन्ध जोड़ लें। उसीकी प्राप्ति करना हमारा खास ध्येय है, खास लक्ष्य है। यह एक बन जायगा तो दूजी बातें आ जायँगी। बिना सीखे ही याद आ जायँगी, भगवान्‌की कृपासे याद आ जायँगी।

——*****——

दस नामापराध

सन्निन्दासति नामवैभवकथा श्रीशेशयोर्भेदधी-
रश्रद्धा श्रुतिशास्त्रदैशिकगिरां नाम्न्यर्थवादभ्रमः।
नामास्तीति निषिद्धवृत्तिविहितत्यागौ च धर्मान्तरैः
साम्यं नामजपे शिवस्य च हरेर्नामापराधा दश॥

भगवन्नाम-जपमें दस अपराध होते हैं। उन दस अपराधोंसे रहि होकर हम नाम जपें। कई ऐसा कहते हैं—

राम नाम सब कोई कहे, दशरथ कहे न कोय।
एक बार दशरथ कहे, तो कोटि यज्ञ फल होय॥

और कई तो ***'दशरथ कहे न कोय'*** की जगह ***'दशऋत कहे न कोय*** कहते हैं अर्थात् 'दशऋत'—दस अपराधोंसे रहित नहीं करते। साथ साथ अपराध करते रहते हैं। उस नामसे भी फायदा होता है। पर ना महाराजकी शक्ति उन अपराधोंके नाश होनेमें खर्च हो जाती है। अपरा करता है तो नाम महाराज प्रसन्न नहीं होते। वे रुष्ट होते हैं। ये अपरा हमारेसे न हों। इसके लिये ख्याल रखें। दस अपराध बताये जाते हैं वे इस प्रकार हैं—

'सन्निन्दा'—(१) पहला अपराध तो यह माना है कि श्रेष्ठ पुरुषों निन्दा की जाय। अच्छे-पुरुषोंकी, भगवान्‌के प्यारे भक्तोंकी जो निन् करेंगे, भक्तोंका अपमान करेंगे, तो उससे नाम महाराज रुष्ट हो जायँगे

इस वास्ते किसीकी भी निन्दा न करें; क्योंकि किसीके भले-बुरेका पता नहीं लगता है।

ऐसे-ऐसे छिपे हुए सन्त-महात्मा होते हैं कि गृहस्थ आश्रममें रहनेवाले, मामूली वर्णमें, मामूली आश्रममें, मामूली साधारण स्त्री-पुरुष दीखते हैं, पर भगवान्‌के बड़े प्रेमी और भगवान्‌का नाम लेनेवाले होते हैं। उनका तिरस्कार कर दें, अपमान कर दें, निन्दा कर दें तो कहीं भगवान्‌के भक्तकी निन्दा हो गयी तो नाम महाराज प्रसन्न नहीं होंगे।

'नाम चेतन कू चेत भाई। नाम चौथे कूँ मिलाई।' नाम चेतन है। भगवान्‌का नाम दूसरे नामोंकी तरह होता है, ऐसा नहीं है। वह जड़ नहीं है, वह चेतन है। भगवान्‌का श्रीविग्रह चिन्मय होता है—*'चिदानंदमय देह तुम्हारी।'* हमारे शरीर जड़ होते हैं, शरीरमें रहनेवाला चेतन होता है। पर भगवान्‌का शरीर भी चिन्मय होता है। उनके गहने-कपड़े आदि भी चिन्मय होते हैं। उनका नाम भी चिन्मय है। यदि ऐसे चिन्मय नाम महाराजकी कृपा चाहते हो, उसकी मेहरबानी चाहते हो तो जो अच्छे पुरुष हैं और जो नाम लेनेवाले हैं, उनकी निन्दा मत करो।

'असति नामवैभवकथा'—(२) जो भगवन्नाम नहीं लेता, भगवान्‌की महिमा नहीं जानता, भगवान्‌की निन्दा करता है, जिसकी नाममें रुचि नहीं है, उसको जबरदस्ती भगवान्‌के नामकी महिमा मत सुनाओ। वह सुननेसे तिरस्कार करेगा तो नाम महाराजका अपमान होगा। वह एक अपराध बन जायगा। इस वास्ते उसके सामने भगवान्‌के नामकी महिमा मत कहो। साधारण कहावत आती है—

हरि हीराँ री गाठड़ी, गाहक बिना मत खोल।
आसी हीराँ पारखी, बिकसी मँहगे मोल॥

भगवान्‌के ग्राहकके बिना नाम-हीरा सामने क्यों रखे भाई ? वह तो आया है दो पैसोंकी मूँगफली लेनेके लिये और आप सामने रखो तीन लाख रत्न-दाना ? क्या करेगा वह रतनका ? उसके सामने भगवान्‌का नाम क्यों

रखो भाई ? ऐसे कई सज्जन होते हैं जो नामकी महिमा सुन नहीं सक
उनके भीतर अरुचि पैदा हो जाती है।

अन्नसे पले हैं, इतने बड़े हुए; परन्तु भीतर पित्तका जोर होता है
मिश्री खराब लगती है, अन्नकी गन्ध आती है। वह भाता नहीं, सुह
नहीं। अगर अन्न अच्छा नहीं है, तो इतनी बड़ी अवस्था कैसे हो गयी
अन्न खाकर तो पले हो, फिर भी अन्न अच्छा नहीं लगता ? कारण
है ? पेट खराब है। पित्तका जोर है।

तुलसी पूरब पाप ते, हरिचर्चा न सुहात।
जैसे जुरके जोरसे, भोजनकी रुचि जात॥

ज्वरमें अन्न अच्छा नहीं लगता। ऐसे ही पापीको बुखार है, इ
वास्ते उसे नाम अच्छा नहीं लगता। तो उसको नाम मत सुनाओ। मि
कड़वी लगती है सज्जनो ! और मिश्री कड़वी है तो क्या कुटक, चिराय
मीठा होगा ? परन्तु पित्तके जोरसे जीभ खराब है। पित्तकी परवाह न
मिश्री खाना शुरू कर दो। खाते-खाते पित्त शान्त हो जायगा और मि
मीठी लगने लग जायगी।

ऐसे किसीका विचार हो, रुचि न हो तो नाम-जप करना शुरू क
दे इस भावसे कि यह भगवान्‌का नाम है। हमें अच्छा नहीं लगता
हमारी अरुचि है तो हमारी जीभ खराब है। यह नाम तो अच्छा
है—ऐसा भाव रखकर नाम लेना शुरू कर दें और भगवान्‌से प्रार्थना क
कि हे नाथ ! आपके चरणोंमें रुचि हो जाय, आपका नाम अच्छा लगे
ऐसे भगवान्‌से कहता रहे, प्रार्थना करता रहे तो ठीक हो जायगा।

'श्रीशेशयोर्भेदधीः'—(३) भगवान् विष्णुके भक्त हैं तो शंकर
निन्दा न करें। दोनोंमें भेद-बुद्धि न करें। भगवान् शंकर और वि
दो नहीं हैं—

उभयोः प्रकृतिस्त्वेका प्रत्ययभेदेन भिन्नवद्भाति।
कलयति कश्चिन्मूढो हरिहरभेदं विना शास्त्रम्॥

भगवान् विष्णु और शंकर इन दोनोंका स्वभाव एक है। परन्तु भक्तोंके भावोंके भेदसे भिन्नकी तरह दीखते हैं। इस वास्ते कोई मूढ़ दोनोंका भेद करता है तो वह शास्त्र नहीं जानता। दूसरा अर्थ होता है '**हञ् हरणे**' धातु तो एक है पर प्रत्यय-भेद है। हरि और हर ऐसे प्रत्यय-भेदसे भिन्नकी तरह दीखते हैं। 'हरि-हर'के भेदको लेकर कलह करता है वह '**विना शास्त्रम्**' पढ़ा लिखा नहीं है और '**विनाशाय अस्त्रम्**'—अपना नाश करनेका अस्त्र है।

भगवान् शंकर और विष्णु इन दोनोंका आपसमें बड़ा प्रेम है। गुणोंके कारणसे देखा जाय तो भगवान् विष्णुका सफेद रूप होना चाहिये और भगवान् शंकरका काला रूप होना चाहिये; परन्तु भगवान् विष्णुका श्याम वर्ण है और भगवान् शंकरका गौर वर्ण है, बात क्या है। भगवान् शंकर ध्यान करते हैं भगवान् विष्णुका और भगवान् विष्णु ध्यान करते हैं भगवान् शंकरका। ध्यान करते हुए दोनोंका रंग बदल गया। विष्णु तो श्यामरूप हो गये और शंकर गौर वर्णवाले हो गये—'**कर्पूरगौरं करुणावतारम्।**'

अपने ललाटपर भगवान् रामके धनुषका तिलक करते हैं शंकर और शंकरके त्रिशूलका तिलक करते हैं रामजी। ये दोनों आपसमें एक-एकके इष्ट हैं। इस वास्ते इनमें भेद-बुद्धि करना, तिरस्कार करना, अपमान करना बड़ी गलती है। इससे भगवन्नाम महाराज रुष्ट हो जायँगे। इस वास्ते भाई, भगवान्के नामसे लाभ लेना चाहते हो तो भगवान् विष्णुमें और शंकरमें भेद मत करो।

कई लोग बड़ी-बड़ी भेद-बुद्धि करते हैं। जो भगवान् कृष्णके भक्त हैं, भगवान् विष्णुके भक्त हैं, वे कहते हैं कि हम शंकरका दर्शन ही नहीं करेंगे। यह गलतीकी बात है। अपने तो दोनोंका आदर करना है। दोनों एक ही हैं। ये दो रूपसे प्रकट होते हैं—***'सेवक स्वामि सखा सिय पी के।'***

'**अश्रद्धा श्रुतिशास्त्रदैशिकगिराम्**'—वेद, शास्त्र और महापुरुषोंके वचनोंमें अश्रद्धा करना अपराध है।

(४) जब हम नाम-जप करते हैं तो हमारे लिये वेदोंके पाठनकी क्या आवश्यकता है ? वैदिक कर्मोंकी क्या आवश्यकत इस प्रकार वेदोंपर अश्रद्धा करना नामापराध है।

(५) शास्त्रोंने बहुत कुछ कहा है। कोई शास्त्र कुछ कहता कोई कुछ कहता है। उनकी आपसमें सम्मति नहीं मिलती। ऐसे शा पढ़नेसे क्या फायदा है ? उनको पढ़ना तो नाहक वाद-विवादमें पड़ इस वास्ते नाम-प्रेमीको शास्त्रोंका पठन-पाठन नहीं करना चाहिये प्रकार शास्त्रोंमें अश्रद्धा करना नामापराध है।

(६) जब हम नाम-जप करते हैं तो गुरु-सेवा करनेकी आवश्यकता है ? गुरुकी आज्ञापालन करनेकी क्या जरूरत नाम-जप इतना कमजोर है क्या ? नाम-जपको गुरु-सेवा आदिसे मिलता है क्या ? नाम-जप उनके सहारे है क्या ? नाम-जपमें सामर्थ्य नहीं है जो कि गुरुकी सेवा करनी पड़े ? सहारा लेना पड़े ? प्रकार गुरुमें अश्रद्धा करना नामापराध है।

वेदोंमें अश्रद्धा करनेवालेपर भी नाम महाराज प्रसन्न नहीं होते तो श्रुति हैं, सबकी माँ-बाप हैं। सबको रास्ता बतानेवाली हैं। इस वेदोंमें अश्रद्धा न करे। ऐसे शास्त्रोंमें—पुराण, शास्त्र, इतिहासमे अश्रद्धा न करे, तिरस्कार-अपमान न करे। सबका आदर करे। शा पुराणोंमें, वेदोंमें, सन्तोंकी वाणीमें, भगवान्‌के नामकी महिमा भरी है। शास्त्रों, सन्तों आदिने जो भगवन्नामकी महिमा गायी है, यदि इकट्ठी की जाय तो महाभारतसे बड़ा पोथा बन जाय। इतनी महिमा है, फिर भी इसका अन्त नहीं है। फिर भी उनकी निन्दा करे और लाभ लेना चाहे तो कैसे होगा ?

जिन गुरु महाराजसे हमें नाम मिला है, यदि उनका निरादर

तिरस्कार करेंगे तो नाम महाराज रुष्ट हो जायँगे। कोई कहते हैं कि हमने गुरु किये पर वे ठीक नहीं निकले। ऐसी बात भी हो जाय तो मैं एक बात कहता हूँ कि आप उनको छोड़ दो भले ही, परन्तु निन्दा मत करो।

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः।
उत्पथप्रतिपन्नस्य परित्यागो विधीयते॥

ऐसा विधान आता है। इस वास्ते गुरुको छोड़ दो और नाम-जप करो। भगवान्‌के नामका जप तो करो, पर गुरुकी निन्दा मत करो। जिससे कुछ भी पाया है, पारमार्थिक बातें ली हैं, जिससे लाभ हुआ है, भगवान्‌की तरफ रुचि हुई है, चेत हुआ है, होश हुआ है, उसकी निन्दा मत करो।

'**नाम्न्यर्थवादभ्रमः**'—(७) नाममें अर्थवादका भ्रम है। यह महिमा बढ़ा-चढ़ाकर कही है; इतनी महिमा थोड़ी है नामकी! नाममात्रसे कल्याण कैसे हो जायगा? ऐसा भ्रम न करें; क्योंकि भगवान्‌का नाम लेनेसे कल्याण हो जायगा। नाममें खुद भगवान् विराजमान हैं। मनुष्य नींद लेता है तो नाम लेते ही सुबोध होता है अर्थात् किसीको नींद आयी हुई है तो उसका नाम लेकर पुकारो तो वह नींदमें सुन लेगा। नींदमें सम्पूर्ण इन्द्रियाँ मनमें, मन बुद्धिमें और बुद्धि अविद्यामें लीन हुई रहती है—ऐसी जगह भी नाममें विलक्षण शक्ति है। '**शब्दशक्तेरचिन्त्यत्वात्**' शब्दमें अपार, असीम, अचिन्त्य शक्ति मानी है। नींदमें सोता हुआ जग जाय। अनादि कालसे सोया हुआ जीव सन्त-महात्माओंके वचनोंसे जग जाता है, उसको होश आ जाता है। जिस बेहोशीमें अनन्त जन्म बीत गये। लाखों-करोड़ों वर्ष बीत गये। ऐसे नींदमें सोता हुआ भी, शब्दमें इतनी अलौकिक विलक्षण शक्ति है, जिससे वह जाग्रत् हो जाय, अविद्या मिट जाय, अज्ञान मिट जाय। ऐसे उपदेशसे विचित्र हो जाय आदमी।

यह तो देखनेमें आता है। सत्संग सुननेसे आदमीमें परिवर्तन आता

है। उसके भावोंमें महान् परिवर्तन हो जाता है। पहले उसमें क्या-
इच्छाएँ थीं, उसकी क्या दशा थी, किधर वृत्ति थी, क्या काम करता थ
और अब क्या करता है? इसका पता लग जायगा। इस वास्ते शब
अचिन्त्य शक्ति है।

नाममें अर्थवादकी कल्पना करना कि नामकी महिमा झूठी गा
है, लोगोंकी रुचि करनेके लिये यह धोखा दिया है। थोड़ा ठंडे दिमा
सोचो कि सन्त-महात्मा भी धोखा देंगे तो तुम्हारे कल्याणकी, हितकी ब
कौन कहेगा? बड़े अच्छे-अच्छे महापुरुष हुए हैं और उन्होंने क
है—'भैया! भगवान्का नाम लो। असम्भव सम्भव हो जाय। लोग
ऐसा करके देखा है। असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है। जो न
होनेवाली है वह भी हो जाती है। जिनके ऐसी बीती है उम्रमें, उन लोग
कहा है। ऐसी असम्भव बात सम्भव हो जाय, न होनेवाली हो जा
इसमें क्या आश्चर्य है? क्योंकि '**कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ ईश्वरः**' ई
करनेमें, न करनेमें, अन्यथा करनेमें समर्थ होता है। वह ईश्वर वशमें
जाय अर्थात् भगवान् भगवन्नाम लेनेवालेके वशमें हो जाते हैं।

नाम महाराजसे क्या नहीं हो सकता? ऐसा कुछ है ही नहीं, जो
हो सके अर्थात् सब कुछ हो सकता है। भगवान्का नाम लेनेसे ऐसे ल
होता है बड़ा भारी। नामसे बड़े-बड़े असाध्य रोग मिट गये हैं, बड़े-ब
उपद्रव मिट गये हैं, भूत-प्रेत-पिशाच आदिके उपद्रव मिट गये ह
भगवान्का नाम लेनेवाले सन्तोंके दर्शनमात्रसे अनेक प्रेतोंका उद्धार
गया। भगवान्का नाम लेनेवाले पुरुषोंके संगसे, उनकी कृपासे अने
जीवोंका उद्धार हो गया है।

सज्जनो! आप विचार करें तो यह बात प्रत्यक्ष दीखेगी कि जि
देशोंमें सन्त-महात्मा घूमते हैं, जिन गाँवोंमें, जिन प्रान्तोंमें सन्त रहते
और जिन गाँवोंमें सन्तोंने भगवान्के नामका प्रचार किया है, वे गाँव अ
विलक्षण हैं दूसरे गाँवोंसे। जिन गाँवोंमें सौ-दो-सौ वर्षोंसे कोई सन्त न

गया है, वे गाँव ऐसे ही पड़े हैं अर्थात् वहाँके लोगोंकी भूत-प्रेत-जैसी दशा है। भगवान्‌का नाम लेनेवाले पुरुष जहाँ घूमे हैं, पवित्रता आ गयी, विलक्षणता आ गयी, अलौकिकता आ गयी। वे गाँव सुधर गये, घर सुधर गये, वहाँके व्यक्ति सुधर गये, उनको होश आ गया। वे स्वयं भी कहते हैं, 'हम मामूली थे पर भगवान्‌का नाम मिला, सन्त मिल गये तो हम मालामाल हो गये।

१९९३ वि० सं०में हमलोग तीर्थयात्रामें गये थे तो काठियावाड़में एक भाई मिला। उसने हमको पाँच-सात वर्षोंकी उम्र बतायी। अरे भाई ! तुम इतने बड़े दीखते हो, तो क्या बात है ? उस भाईने कहा—मैं सात वर्षोंसे ही 'कल्याण' मासिक पत्रका ग्राहक हूँ। जबसे इधर रुचि हुई, तबसे ही मैं अपनेको मनुष्य मानता हूँ। पहलेकी उम्रको मैं मनुष्य मानता ही नहीं, मनुष्यके लायक काम नहीं किया। उद्दण्ड, उच्छृङ्खल होते रहे। तो बोलो, कितना विलक्षण लाभ होता है ? 'तीर्थयात्रा-ट्रेन गीताप्रेसकी है'—ऐसा सुनते तो लोग परिक्रमा करते। जहाँ गाड़ी खड़ी रहती, वहाँके लोग कीर्तन करते और स्टेशनों-स्टेशनोंपर कीर्तन होता कि आज तीर्थयात्राकी गाड़ी आनेवाली है।

यह महिमा किस बातकी है ? यह सब भगवान्‌को, भगवान्‌के नामको लेकर है। आज भी हम गोस्वामीजीकी महिमा गाते हैं, रामायणजीकी महिमा गाते हैं, तो क्या है ? भगवान्‌का चरित्र है, भगवान्‌का नाम है। गोस्वामीजी महाराज भी कहते हैं—*'एहि महँ रघुपति नाम उदारा।'* इसमें भगवान्‌का नाम है जो कि वेद, पुराणका सार है। इस कारण रामायणकी इतनी महिमा है। भगवान्‌की महिमा, भगवान्‌के चरित्र, भगवान्‌के गुण होनेसे रामायणकी महिमा है। जिसका भगवान्‌से सम्बन्ध जुड़ जाता है, वह विलक्षण हो जाता है। गङ्गाजी सबसे श्रेष्ठ क्यों हैं ? भगवान्‌के चरणोंका जल है। भगवान्‌के साथ सम्बन्ध है। इस वास्ते भगवान्‌के नामकी महिमामें अर्थवादकी कल्पना करना गलत है।

'नामास्तीति निषिद्धवृत्तिविहितत्यागौ'—(८) निषिद्ध आच
करना और (९) विहित कर्मोंका त्याग कर देना। जैसे, हम नाम-
करते हैं तो झूठ-कपट कर लिया, दूसरोंको धोखा दे दिया, चोरी कर
दूसरोंका हक मार लिया तो इसमें क्या पाप लगेगा। अगर लग भी ज
तो नामके सामने सब खत्म हो जायगा; क्योंकि नाममें पापोंके न
करनेकी अपार शक्ति है—इस भावसे नामके सहारे निषिद्ध आच
करना नामापराध है।

भगवान्‌का नाम लेते हैं। अब सन्ध्याकी क्या जरूरत है ? गायत्री
क्या जरूरत है ? श्राद्धकी क्या जरूरत है ? तर्पणकी क्या जरूरत है
क्या इस बातकी जरूरत है ? इस प्रकार नामके भरोसे शास्त्र-विधि
त्याग करना भी नाम महाराजका अपराध है। यह नहीं छोड़ना चाहिये
अरे भाई ! यह तो कर देना चाहिये। शास्त्रने आज्ञा दी है। गृहस्थोंके लि
जो बताया है, वह करना चाहिये।

नाम्नोऽस्ति यावती शक्तिः पापनिर्हरणे हरेः।
तावत् कर्तुं न शक्नोति पातकं पातकी जनः॥

भगवान्‌के नाममें इतने पापोंके नाश करनेकी शक्ति है कि उतने प
पापी कर नहीं सकता। लोग कहते हैं कि अभी पाप कर लो, ठगी
धोखेबाजी कर लो, पीछे राम-राम कर लेंगे तो नाम उसके पापों
नाश नहीं करेगा। क्योंकि उसने तो भगवन्नामको पापोंकी वृद्धि
हेतु बनाया है। भगवान्‌के नामके भरोसे पाप किये हैं, उसको न
कैसे दूर करेगा ?

इस विषयमें हमने एक कहानी सुनी है। एक कोई सज्जन थे। उन
अंग्रेजोंसे एक अधिकार मिल गया था कि जिस किसीको फाँसी होती ह
अगर वहाँ जाकर खड़ा रह जाय तो उसके सामने फाँसी नहीं
जायगी—ऐसी उसको छूट दी हुई थी। उसकी लड़की जिसको ब्या
थी, वह दामाद उद्दण्ड हो गया। चोरी भी करे, डाका भी डाले, अन्य

भी करे। उसकी स्त्रीने मना किया तो वह कहता है क्या बात है ? तेरा बाप, अपनी बेटीको विधवा होने देगा क्या ? उसका जवाँई हूँ। उस लड़कीने अपने पिताजीसे कह दिया—'पिताजी ! आपके जवाँई तो आजकल उद्दण्ड हो गये हैं ? कहना मानते हैं नहीं। ससुरने बुलाकर कहा कि ऐसा मत करो, तो कहने लगा—'जब आप हमारे ससुर हैं, तो मेरेको किस बातका भय है।' ऐसा होते-होते एक बार उसका जवाँई किसी अपराधमें पकड़ा गया और उसे फाँसीकी सजा हो गयी। जब लड़कीको पता लगा तो उसने आकर कहा—पिताजी ! मैं विधवा हो जाऊँगी। पिताजी कहते हैं—बेटी ! तू आज नहीं तो कल, एक दिन विधवा हो जायगी। उसकी रक्षा मैं कहाँतक करूँ। मेरेको अधिकार मिला है, वह दुरुपयोग करनेके लिये नहीं है। बेटीके मोहमें आकर पापका अनुमोदन करूँ, पापकी वृद्धि करूँ। यह बात नहीं होगी। वे नहीं गये।

ऐसे ही नाम महाराजके भरोसे कोई पाप करेगा तो नाम-महाराज वहाँ नहीं जायँगे। उसका वज्रलेप पाप होगा, बड़ा भयंकर पाप होगा।

'धर्मान्तरैः साम्यम्' (१०) भगवान्‌के नामकी अन्य धर्मोंके साथ तुलना करना अर्थात् गङ्गास्नान करो, चाहे नाम-जप करो। नाम-जप करो, चाहे गोदान कर दो । सब बराबर है। ऐसे किसीके बराबर नामकी बात कह दो तो नामका अपराध हो जायगा। नाम महाराज तो अकेला ही है। इसके समान दूसरा कोई साधन, धर्म है ही नहीं। भगवान् शंकरका नाम लो चाहे भगवान् विष्णुका नाम लो। ये नाम दूसरोंके समान नाम नहीं हैं। नामकी महिमा सबमें अधिक है, सबसे श्रेष्ठ है।

इस प्रकार इन दस अपराधोंसे रहित होकर नाम लिया जाय तो वह बड़ी जल्दी उन्नति करनेवाला होता है। अगर नाम जपनेवालेसे इन अपराधोंमेंसे कभी कोई अपराध बन भी जाय तो उसके लिये दूसरा प्रायश्चित्त करनेकी जरूरत नहीं है, उसको तो ज्यादा नाम-जप ही करना

चाहिये; क्योंकि नामापराधको दूर करनेवाला दूसरा प्रायश्चित्त है ही नहीं

नाम महाराजकी तो बहुत विलक्षण, अलौकिक महिमा है,
महिमाको स्वयं भगवान् भी कह नहीं सकते। इस वास्ते जो के
नामनिष्ठ है; जो रात-दिन नाम-जपके ही परायण है, जिनका सम्पूर्ण जी
नाम-जपमें ही लगा है; नाम महाराजके प्रभावसे उनके लिये
अपराधोंमेंसे कोई भी अपराध लागू नहीं होता। ऐसे बहुत-से सन्त
हैं, जो शास्त्रों, पुराणों, स्मृतियों आदिको नहीं जानते थे, परन्तु
महाराजके प्रभावसे उन्होंने वेदों, पुराणों आदिके सिद्धान्त अपनी साध
ग्रामीण भाषामें लिख लिये हैं। इस वास्ते सच्चे हृदयसे नाममें
जाओ भाई; क्योंकि यह कलियुगका मौका है। बड़ा सुन्दर अव
मिल गया है।

* * * *

होहि राम को नाम जपु

भगवन्नामके प्रसंगमें एक बात विशेषतासे कही गयी थी कि नाम-जपमें विधियोंकी इतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी आवश्यकता भीतरके प्रेमकी है। भगवान् प्रिय लगें, मीठे लगें। भगवान्का नाम, उनके गुण, उनका प्रभाव, उनका तत्त्व, उनसे सम्बन्धित बातें प्रिय, मीठी लगें। जैसे लोभीको धनकी बातें अच्छी लगती हैं, मोही आदमीको परिवारकी बातें अच्छी लगती हैं, वैसे ही भगवान्की बातें अच्छी लगें, मीठी लगें। इस प्रियता, मिठासमें जो लाभ है, वह पहले कही विधियोंमें नहीं है। हाँ, पहले कही विधियोंका पालन करते-करते भी यह मिठास पैदा हो सकती है।

भगवान् प्रिय, मीठे लगें—इसमें खास बात है कि भगवान् अपने हैं। संसार अपना नहीं है। यह शरीर भी अपना नहीं है। यह मिला हुआ है और बिछुड़ जायगा। भगवान् मिले हुए नहीं हैं और बिछुड़नेवाले नहीं हैं। वे सदैव साथ रहनेवाले हैं। भगवान् हमारेसे दूर नहीं हुए हैं, अलग नहीं हुए हैं, हम ही भगवान्से विमुख हुए हैं। वे सदैव हैं और अपने हैं। इस वास्ते भगवान्को अपना मानें। संसारको अपना न मानें। मनुष्योंकी उलटी धारणा हो रही है कि शरीरको, रुपये-पैसोंको, घरको अपना मानते हैं। ये किसीके अपने नहीं हैं। रुपये इतने विरक्त हैं कि किसीके नहीं हैं। जिन रुपयोंके लिये झूठ-कपट करते हो, बेईमानी

करते हो, ठगी करते हो, धोखा देते हो, घरवालोंसे लड़ाई करते हो
जिनके लिये ससुर-जवाँईमें लड़ाई हो जाय, भाई-भाईमें लड़ाई हो ज
मित्र-मित्रमें लड़ाई हो जाय—ऐसे लड़ाई कर लेते हो, धर्म-कर्म
देते हो, वे रुपये जाते हुए पूछते ही नहीं तुमसे। सलाह भी नहीं लेते
चले जाते हैं। फिर आप एक तरफसे क्यों अपनापन करते हो।

भगवान्‌को याद न करो तो भी भगवान् आपके हैं। वे आ
पालन-पोषण करते हैं; आपकी रक्षा करते हैं; सब तरहसे आ
कल्याण करते हैं। ऐसे प्रभुको अपना न मानना बड़ी भारी गलतीकी
है। प्रभु अपने हैं और अपने होनेसे अपनेको मीठे लगते हैं।

'पन्नगारि सुन प्रेम सम भजन न दूसर आन' प्रेमके समान दू
कोई भजन नहीं है।

प्रेम पैदा होता है अपनापन हो जानेसे। अपनापन होते ही प्रि
पैदा होती है। अपना कपड़ा, अपनी वस्तु अपनेको अच्छी लगती
क्योंकि उसको अपना मान लिया। बालकको अपनी माँ अच्छी ल
है। दूसरी स्त्री सुन्दर भी है। उसके गहने भी बढ़िया हैं। कपड़े भी ब
हैं। परन्तु अपनी माँ जैसी प्यारी लगती है, मीठी लगती है, वैसी प
मीठी दूसरी स्त्री नहीं लगती। माँको भी अपना लड़का अच्छा लगता
वह काला-कलूटा कैसा ही है, सुन्दर नहीं है, तब भी माँको वही अ
लगता है। अच्छा लगनेमें कारण क्या है? अपनापन है। यह अपन
मार्मिक बात है और सार बात है।

आपलोगोंको मामूली-सी सामान्य बात दीखती होगी, पर मे
बहुत देरीसे मिली है। सुनने-पढ़नेमें भी नहीं मिली और मिली
तो पकड़ी नहीं गयी। प्रेम कैसे हो? उपाय कई पढ़े-सुने, प
असली उपाय है अपनापन। अपनापन होनेसे प्रेम होता है।
वास्ते भगवान्‌को अपना मानो, संसारको अपना मत मानो; क
यह संसार अपना नहीं है।

जो चीज अपनी नहीं है, अपने पास नहीं है उसका उपार्जन करनेमें अभिमान करता है और अपनेमें समझता है कि मैंने बड़ा भारी काम कर लिया। निर्धन था और धनवान् बन गया। अकेला था, बहुत परिवार-वाला हो गया। मूर्ख था, पढ़कर पण्डित हो गया। प्रसिद्धि नहीं थी, अब वाह-वाह हो गयी। अब इसमें ध्यान देना। जो नहीं है, उसकी प्राप्तिमें मनुष्य बहादुरी मानता है। वास्तवमें जो नहीं है, उसकी प्राप्तिमें बहादुरी नहीं है; क्योंकि वह चीज पहले नहीं थी, फिर नहीं रहेगी और अन्तमें नहीं हो जायगी। बहादुरी तो उसीमें है, जो पहले भी हमारे थे और अभी भी हमारे हैं, उन भगवान्‌की प्राप्ति कर ली जाय। वे प्राप्त हो जायँ तो फिर मिटेंगे नहीं कभी। बिछुड़ेंगे भी नहीं। वे सदैव हमारे हैं, हमारे साथ हैं, हमारे थे और रहेंगे। हम सम्मुख हो जायँगे तो निहाल हो जायँगे। विमुख रहेंगे तो दुःख पाते रहेंगे। विमुख होनेपर भी भगवान् हमारे ही रहेंगे। पर हमारेको लाभ नहीं होगा। इस वास्ते प्रभुको अपना बना लें। उनके साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लें। यह बहुत दामी और श्रेष्ठ बात है।

सत्संग सुननेका भी नतीजा यह होना चाहिये कि हम भगवान्‌के सम्मुख हो जायँ, उनको अपना मान लें। संसारमें मोह बहुत दिन किया। जन्म-जन्मान्तरोंमें किया। परन्तु हाथ कुछ नहीं लगा; रहे रोते-के-रोते! भगवान्‌से अगर प्रेम करते तो निहाल हो जाते। बिलकुल सच्ची बात है।

भगवान् सदैव साथमें रहते हैं। प्राण जानेपर भी उस समय भगवान् साथमें रहते हैं। प्राण रहनेपर भी साथमें रहते हैं। सम्पत्तिमें भी साथमें रहते हैं। विपत्तिमें भी साथमें रहते हैं। हर हालतमें वे साथ रहते हैं और साथ हैं। मनुष्य केवल उस तरफ ध्यान नहीं देता। इधर दृष्टि नहीं डालता कि प्रभु मेरे हैं। इससे यह वञ्चित हो रहा है, दुःखी हो रहा है। ऐसे प्रभुसे अपनापन करो। अपनापन करके उनके नामका जप करो। गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज कहते हैं—

***'बिगरी जनम अनेक की सुधरै अबहीं आजु'*—**

अनेक जन्मोंकी बिगड़ी हुई बात आज सुधर जाय। आज सु जाय। आज भी अभी-अभी इसी क्षण सुधर जाय ***'होहि राम को न जपु तुलसी तजि कुसमाजु।'*** जैसे भगवान्‌को अपना माना, अपनेको भगवान्‌का मान लें। ***'पतिव्रता रहे पतिके पासा, ज्यूँ सां के ढिग रहे दासा।'*** जैसे पतिव्रता होती है। ***'पतिव्रत एक धणी'*** उसी हो जाती है वह। माँ-बापकी, भाई-भतीजोंकी नहीं रही। वह एककी जाती है। वह जैसे पतिव्रता होती है, ऐसे तुम भगवान्‌के होकर रहो। तो भगवान्‌के पहले थे, अब हो और अगाड़ी रहोगे। गोस्वामीजी महार कहते हैं ***'होहि राम को नाम जपु'*** भगवान्‌के हो करके भगवान्‌का न जपो। ***'तुलसी तजि कुसमाजु'*** कुसमाज क्या है ? भगवान्‌के सिव सब कुसमाज है, कुसंग है। उसमें मोह करोगे तो फँस जाओगे, फाय नहीं होगा। इस वास्ते एक भगवान् मेरे हैं।

'मीराबाई इतनी बड़ी हो गयी इसमें कारण क्या है?' ***'मेरे गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।'*** इसमें विलक्षण बात है कि दूसरा नहीं है। मेरे तो भगवान् हैं। इसका भगवान्‌पर असर पड़ता अनन्य-भावसे उसने आश्रय ले लिया। भगवान्‌के हम हैं। और इ एक बात समझनेकी है कि प्रभुने किसीका त्याग नहीं किया है। यह ज उनसे विमुख हुआ है। भगवान् विमुख नहीं हुए हैं। वे सदैव ही जीव ऊपर कृपा करते रहते हैं। हम प्रभुको अपना मान लें। प्रभु मानते न प्रभु तो जानते हैं कि मेरा ही है और मानते भी हैं। आप हैं प्रभुके पर गलती यह कर ली कि संसारको अपना मान लिया और अपने संसारका मान लिया।' यह बड़ी भूल की है। इस गलतीका सुधार लें। भगवान् हमारे हैं और हम भगवान्‌के हैं।

देखो ! जो कपूत होता है, वह पूत नहीं होता है—ऐसा नहीं सपूत भी पूत है और कपूत-से-कपूत भी पूत है। एक कल्पना करो

यहाँसे किसीका लड़का चला गया बम्बई, वहाँ जाकर बड़ी उद्दण्डता की, बहुत गलतियाँ कीं, लोगोंको दुःख दिया तो फँस गया कैदमें। कैदसे छूटकर घरपर आ गया तो बड़ी अपकीर्ति हुई। वहाँका कोई आदमी यहाँ आकर कहने लगे कि अमुक-अमुक नामका लड़का ऐसा-ऐसा कपूत निकला और संयोगवश उसका पिता वहाँ बैठा है तो लोग कहते हैं—'तुम जिसके लिये कहते हो, वह इनका बेटा है।' उनसे पूछा कि आपका लड़का है क्या ? तो वह सिरपर हाथ रखकर कहता है—'फूट गया, मेरा ही लड़का है !' वह चाहे कितना पश्चात्ताप करे, पर 'लड़का मेरा नहीं' ऐसा नहीं, नहीं कह सकता। ऐसे ही भगवान् नहीं कह सकते कि मेरा नहीं है। चाहे नारकीय जीव है, बड़े दुर्गुण-दुराचार किये हैं, बड़ी यातना, दुःख, कष्ट भोग रहा है, परन्तु भगवान् यह नहीं कह सकते कि मेरा नहीं है।

कपूताईका दण्ड देकर भगवान् उसे शुद्ध करेंगे। उसे पवित्र करेंगे; क्योंकि वह भगवान्‌का अपना है। ऐसे ही भाइयो-बहनो ! हम सब कैसे ही हैं, किसी तरहके ही हैं, पर हैं तो भगवान्‌के ही। यह पक्की बात है। आप मानते नहीं हैं तबतक दुःख पाते हैं। आप मान लें तो यह कपूताई मिट जायगी। बड़े-बड़े अवगुण मिट जायँगे। प्रभुकी कृपासे शुद्धि हो जायगी। निर्मलता हो जायगी। भगवान्‌के सम्बन्धमात्रसे जीव पवित्र हो जाता है। '**कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥**' (गीता १७। २७) भगवान्‌के लिये किया जाय वह सब सत् हो जाता है। जप, ध्यान, कीर्तन, सत्संग, स्वाध्याय भगवान्‌के लिये किये जायँ, वे सब 'सत्' हो जाते हैं। सब श्रेष्ठ कर्म हो जाते हैं। कौन कर्म ? '**शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः**' (गीता १८। १५) शरीर, वाणी, मनसे जो कर्म आरम्भ किया जायगा उसका आदि होता है और अन्त होता है। वह नित्य नहीं होता है। परन्तु भगवान्‌के लिये जो काम आरम्भ किया जाय, वह काम भी भगवान्‌का हो जायगा, सत् हो जायगा। सत् क्यों हो जायगा ?

भगवान् सत् हैं, भगवान् नित्य हैं। प्रभुके अर्पण कर देनेसे ह
श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ, उत्तम-से-उत्तम काम भी नित्य हो जायँगे। नहीं तो ये
फल देकर नष्ट हो जायँगे। अच्छे शुभ कर्म भी अच्छे शुभ फल दे
अच्छी परिस्थिति देकर नष्ट हो जायँगे। वे ही भगवान्के अर्पण कर
भगवान्के लिये करें तो वे सत् हो जायँगे।

हम भगवान्का होकर भगवान्का ही नाम लें। भगवान्का
चिन्तन करें। भगवान्का ही ध्यान करें। भगवान्के ही गुण स
भगवान्की ही लीला सुनें। भगवान्का ही कीर्तन सुनें और पद गा
भगवान्के होकर भगवान्का गुण गावें तो हम भगवान्के सम्
हो जाते हैं।

भगवान्से विमुख करनेवाला नाशवान्का संग ही कुसंग है।
प्रभुसे विमुख कर देता है। इस वास्ते नाशवान् पदार्थोंका संग कर
नाशवान्का सहारा लेना कि इनसे हमारा कुछ भला हो जायगा—
गलती है। सज्जनो ! इससे लाभ होनेवाला है नहीं; क्योंकि यह नाश
है, नाशवान् ! नाशवान्का अर्थ क्या होता है ? नाशवाला। जैसे धन
होता है। धनवान्का अर्थ क्या ? धनवाला ! धन होनेसे वह धनव
है। धन न होनेसे धनवाला नहीं कहलायेगा। धनवाला धनके कार
है, ऐसे नाशवाला नाशके कारणसे है। धनवान्के पास धनके सि
और कोई महत्ता नहीं है। ऐसे नाशवान् संसारमें नाशके सिवाय और
महत्ता नहीं है। यह नाशवान् है, इसका नाश-ही-नाश होगा।

अविनाशी परमात्माके अंश होकर भी नाशवान्के भरोसे कितना
काम चलायेंगे—यह एक-एक भाई, एक-एक बहनके सोचनेकी
है। आप अविनाशी हैं। ***'ईस्वर अंस जीव अबिनासी'*** यह अविन
होकर नाशवान्का भरोसा करता है। पता नहीं क्या हो गया ? अक्ल
चली गयी ! उत्पन्न और नष्ट होनेवाली वस्तुओंका सहारा मानता है।
चीजोंसे अपनेमें घमण्ड करता है कि मेरे पास इतना धन है, इतनी सम

है, मेरे इतने आदमी, इतने घर, इतनी जमीन है। तेरी कबसे है यह ? क्या सदासे तेरी वस्तुएँ थीं और क्या सदा रहेंगी। मनुष्य जानता है, मानता है कि पहले मेरी नहीं थीं, फिर मेरी नहीं रहेंगी, फिर भी अपनी मान करके अभिमान करता है। सज्जनो ! धोखा हो जायगा धोखा ! उनको अपनी माननेसे प्रभुको अपना मानना बंद हो जायगा, भगवान्‌को अपना कह सकोगे नहीं। ये चीजें रहेंगी नहीं और भगवान्‌का सम्बन्ध जोड़ा नहीं। जिसे अपनी-अपनी कहते हैं, वे रहेंगी नहीं। जो अपना रहेगा, उसमें अपनापन किया नहीं। रोता रहना पड़ेगा भाई, रोना पड़ेगा।

मौका है अभी, बड़ा सुन्दर ! मनुष्य-शरीर मिला है। इस मनुष्य-शरीरकी बड़ी महिमा है। महिमा इस वास्ते है कि यह मनुष्य प्रभुके साथ सम्बन्ध जोड़ सकता है और दूसरे संसारी जितने भी जीव हैं मनुष्यके सिवाय, उनमें यह अक्ल नहीं है कि परमात्माके साथ सम्बन्ध जोड़ लें। वहाँ यह समझ नहीं है और यह योग्यता भी नहीं है। यह विवेक नहीं है। भगवान्‌के साथ सम्बन्ध जोड़नेका एक मनुष्य-शरीरमें ही अवसर है। इस अवसरमें अगर वह नहीं किया तो क्या किया। सांसारिक काम खाना-पीना आदि तो पशु-पक्षी भी करते हैं। नीच-से-नीच प्राणी भी करते हैं। अगर हमने वही काम किया तो सूअर, कुत्ते, ऊँट और गधेकी तरह ही हो गये—

सूकर कूकर ऊँट खर बड़ पशुअन में चार।
तुलसी हरि की भगति बिन वैसे ही नर नार॥

यह वास्तवमें मनुष्य-जन्मका अपमान है। मनुष्य-जन्मका बड़ा तिरस्कार है। कृपा करके ऐसा अपमान न करें, तिरस्कार न करें।

करुणाकर कीन्हीं कृपा, दीन्हीं नरवर देह।
नद चीन्ही कृतहीन नर, खलकर दीन्हीं खेह॥

इसका नाश कर दिया। इससे लाभ लेना चाहिये। ***'कबहुँक करि करुना नर देही'*** करुणा करके प्रभु नर-देह देते हैं। ***'बड़ें भाग मानुष***

तनु पावा' ऐसी पूँजी मिल गयी, उसका नाश कर देना बहुत बड़ी गलती है। ***'सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ'*** वह परलो दुःख पावेगा, सिर धुन-धुनकर पछतायेगा और रोवेगा। परन्तु उ रोनेका फल रोना ही निकलेगा भाई, और कुछ होनेका नहीं है। अ सावचेत हो जाय तो बहुत बड़ा भारी यह काम कर सकता है। अभी करेगा तो पीछे रोवेगा। ***'कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लग*** काल-कर्म-ईश्वरको झूठा दोष लगायेगा। इस वास्ते सच्चे हृद भगवान्‌की तरफ चलो।

एक सीधी सरल बात—भगवान् मेरे हैं। ऐसे भगवान्‌को मेरा दिया तो बड़ा असर पड़ता है प्रभुपर। अनेक जन्मोंसे बिछुड़ा हुआ चौरासी लाख योनियाँ भुगतता हुआ, दुःख पाता हुआ जीव अगर दे—'हे नाथ ! मैं आपका हूँ। हे प्रभु ! आप मेरे हो' तो प्रभुको संतोष होगा। बड़े ही राजी होंगे भगवान्। मानो भगवान्‌की खोयी चीज भगवान्‌को मिल गयी। बड़ा उपकार होगा भगवान्‌पर। भगवा घाटेकी पूर्ति कर दोगे आप। जीव विमुख हो गया, यह भगवा घाटा पड़ गया।

'सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ ना तबहीं ॥' करोड़ों जन्मोंके पाप नष्ट हो जायँ। क्योंकि पाप तो भगवा विमुख होनेसे ही हुए हैं। सब पापोंकी जड़ तो वहाँसे चली है। भगवा सम्मुख होते ही, वे बेचारे पाप टिक नहीं सकेंगे। इस वास्ते 'हे ना मैं आपका हूँ। आप मेरे हैं', ऐसे भगवान्‌के साथ अपनापन है— बहुत सार चीज है, असली चीज है। क्रियाओंके द्वारा आप भगवा नहीं पकड़ सकते, जितना प्रेमके द्वारा, अपनेपनके द्वारा पकड़ सकते बड़े अच्छे-अच्छे काम करो, यज्ञ करो, दान करो, तीर्थ आदि वेदाध्ययन करो। सब-की-सब लाभकी बात है। परन्तु अपनापन जाय—यह बहुत लाभकी और विचित्र बात है।

एक करोड़पतिके यहाँ एक नौकर रहता है, जो बीस हजार रुपये पाता है और करोड़पतिका लड़का है, उसे सौ रुपये महीना भी कोई देता नहीं; क्योंकि वह अयोग्य है। परन्तु पिता मर जाता है, तो बीस हजार (रुपये) पानेवाला नौकर मालिक नहीं बन सकता, पर अयोग्य लड़का मालिक बन जाता है। वह योग्य तो नहीं है, पर उसका हक लगता है। इस प्रकार योग्यतासे वह अधिकार नहीं मिलता, जो अपनेपनसे मिलता है।

'प्रभुके हम हैं'—यह बनाया हुआ अपनापन नहीं है। सेठका अपनी तरफसे कोई बेटा बन जाय और कोई उसे पूछे कि तुम कहते हो या सेठ कहता है ? सेठ क्या कहे ? मैं कहता हूँ। तो उसे कोई मानेगा नहीं। सेठ यदि कह दे कि यह हमारा बेटा है। कोई काम पड़ जाय तो सेठके नामपर लाखों रुपये मिल जायँगे। सेठका कहना जितना दामी है, उतना हमारा कहना दामी नहीं है। भगवान् तो मात्र जीवको अपना कहते हैं—'**ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः**' अब केवल आपकी सम्मति होनेकी जरूरत है। सम्मुख होनेकी आवश्यकता है कि 'मैं भगवान्‌का हूँ।'

यह सब संसार आपको धोखा देगा, आपसे विमुख हो जायगा, चला जायगा, रहेगा नहीं। शरीर भी नहीं रहेगा। इनको आप अपना कहते हैं—यह बहुत बड़ी भारी गलती है। इनसे विमुख होकर भगवान्‌से कहें—'हे नाथ ! मैं आपका हूँ और आप मेरे हैं।' निहाल हो जाओगे, निहाल !

'***होहि राम को नाम जपु***'—नाम जपना हो तो रामका होकर नाम जपो। चलते-फिरते जपो, क्योंकि हमारे प्रभुका नाम है।

जाट भजो गूजर भजो भावे भजो अहीर।
तुलसी रघुबर नाममें सब काहूका सीर॥

भाई, बहन, पढ़ा-लिखा, अपढ़, रोगी, नीरोगी कोई क्यों न हो ?

परमात्माके नाममें सबका अधिकार है। पिताकी सम्पत्तिमें पुत्रका पू
अधिकार है। इस वास्ते हमारे प्रभुका नाम है। कौन मना कर सकता है
बताइये ! हमारे माँ-बाप हैं। ऐसे भगवान्‌पर अधिकार जमा देवें।

कलिसंतरणोपनिषद्‌में नामकी महिमा आयी है। नारदजीने ब्रह्माजीं
पास जाकर कहा—'महाराज ! कलियुगमें रहते हुए संसारसे कैसे उद्ध
कर लें।' तो ब्रह्माजी कहते हैं 'भगवान्‌का नाम लेते हुए।' कौन-स
नाम ? तो कहा—***'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्
कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥'*** यह नाम बताया। इसकी विधि क्या है
ब्रह्माजीने कहा—विधि है ही नहीं। किये जाओ, लिये जाओ
शुद्ध-अशुद्ध हर अवस्थामें। वह तो भाई उपनिषदोंका मन्त्र है। प
'राम-राम' तो बड़ा सीधा और बड़ा सरल है। इसको साबर-मन्त्र कहते
हैं। ***'साबर मन्त्र जाल जिन्ह सिरिजा।'*** इसमें क्या है ? ***'अनमिल
आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू॥'*** साबर-मन्त्र कोई
छन्दकी विधिसे नहीं बैठते, कोई मात्राओंसे नहीं बैठते। साबर-मन्त्र है
भगवान्‌ने जो कह दिया, वह मन्त्र हो गया। ऐसे भगवान्‌का नाम है यह
राम-नाम, इतना विलक्षण है।

'सप्तकोट्यो महामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः'

सात करोड़ बड़े-बड़े मन्त्र हैं चित्तको भ्रमित करनेवाले। **'एक एव
परो मन्त्रो राम इत्यक्षरद्वयम्।'** यह दो अक्षरवाला राम-नाम बड़ा
विलक्षण है। पर महान् मन्त्र है। ***'महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं
मुकुति हेतु उपदेसू॥'*** महामन्त्रके जपते ही ईश महेश हो गये। केवल
महेश हो गये नहीं, काशीजीमें नाम महाराजका क्षेत्र खोल दिया। को
धान, चून देता है, कोई आटा-सीधा देता है। भगवान् शंकरने मुक्तिक
क्षेत्र खोल दिया। बस काशीमें जो मर जाय, मुक्त हो जाय। इस प्रक
पृथ्वीमण्डलपर मुक्तिका क्षेत्र खोला हुआ है भगवान् शंकरने। किसके
बलपर ? राम-नामके बलपर।

'कासीं मुकुति हेतु उपदेसू' नाम महान् मन्त्र है। भगवान् शंकर इसे जपते हैं। इस नामके प्रभावसे आपने मुक्तिका क्षेत्र खोल दिया कि सबकी मुक्ति हो जाय।

अध्यात्मरामायणमें भगवान् शंकर खुद रामजीसे कहते हैं—'भगवन्! मैं भवानीके सहित काशीमें रहता हूँ। **'मुमूर्षुमाणस्य दिशामि मन्त्रं तव रामनाम'** आपका जो राम-नाम मन्त्र है उसका मैं दान देता हूँ मरनेवालेको कि, ले लो भाई जिससे तुम्हारा कल्याण हो जाय। एक सज्जन कहते थे, मैंने कई आदमियोंको देखा है। काशीमें मरनेवालेका कान ऊँचा हो जाता है। मानो शंकर इस कानमें मन्त्र देते हैं। वह नाम अपने भी ले सकते हैं, कितनी मौजकी बात है! कितना ऊँचा नाम है! जो भगवान् शंकरका इष्ट है, वह हम ले सकते हैं कलियुगी जीव! कैसी कृपा हो गयी, अलौकिक कृपा हो रही है। थोड़ी-सी बात है। नाम लेने लग जाय, 'राम राम राम'। सन्तोंने कहा है, ***'मुक्ति मुण्डे में थारे'*** तेरे मुँहमें मुक्ति पड़ी है। राम-राम लेकर निहाल हो जा तू। ऐसा सस्ता भगवान्‌का नाम। जपने लग जाओ, सीधी बात है। खुला भगवान्‌का नाम है। तिजोरियोंमें बंद धनको तो आप हिम्मत करके खुला लेते हैं। पर चौड़े पड़े इस धनको लेते ही नहीं ***'राम दड़ी चौड़े पड़ी, सब कोई खेलो आय। दावा नहीं सन्तदास जीते सो ले जाय॥'*** जो चाहे सो ले जाय, कैसी बढ़िया बात! कितनी उत्तम बात! सबके लिये खुला है। किसीके लिये मनाही नहीं, ऐसा भगवान्‌का नाम तत्परतासे लिया जाय, उत्साहपूर्वक, प्रेमसे, अपने प्रभुका समझ करके।

सन्तोंने कहा—परलोकमें नाम लेनेवाले और नाम न लेनेवाले दोनों हैं। क्यों? नाम लेनेवाले रोते हैं कि इस बातका पता नहीं था कि नामकी इतनी महिमा निकलेगी। यह पता होता तो रात-दिन नाम लेते। नाम न लेनेवाले रोते हैं कि हमारा समय खाली चला गया। बिना नामके खाली चला गया। भाई, अब अपनेको पता लग गया। मरनेके बाद पश्चात्ताप

करोगे तब क्या होगा ? अभी समय है। जबतक यह श्वासकी धोक चलती है, आँखें टिमटिमाती हैं, जीते हैं—यह मौका है; भगवान्‌का ना ले लें। लोग हँसे तो परवाह नहीं।

'हस्ती की चाल चलो मन मेरा,

जगत कूकरी को भुसबा दे। तूं तो राम सिमर जग हंसवा दे ॥

लोग हँसते हैं तो अच्छी बात—हँसो भाई, हँसकर खुश होते है खुशीमें हँसी आती है, बड़े आनन्दकी बात है। हम भगवान्‌का नाम ले तो उनको हँसी आवे, बड़ी अच्छी, बड़े आनन्दकी, बड़ी खुशीकी बा है। अपने तो भगवान्‌के नाममें लग जाओ, बस। हँसी करो, तिरस्क करो, दिल्लगी उड़ाओ, कोई बात नहीं है। सम्मान-मानमें तो नुकसान है अपमान, निन्दा सहनेमें नुकसान नहीं है। इससे पापोंका ही नाश होता है इधर आप नाम लो और वे हँसी-दिल्लगी उड़ावें तो डबल लाभ होगा।

तेरे भावैं जो करौ, भलौ बुरौ संसार।

नारायण तू बैठिकै अपनौ भुवन बुहार ॥

दूसरे करते हैं कि नहीं करते हैं—इस तरफ खयाल करनेकी जरूर नहीं है। जैसे भूख लगती है तो यह पूछते नहीं कि तुमलोगोंने भोजन क लिया है कि नहीं; क्योंकि मैं अब भोजन करना चाहता हूँ। जब प्या लगती है तो यह नहीं पूछते कि तुमलोगोंने जल पिया है कि नह क्योंकि मैं जल पीना चाहता हूँ। प्यास लग गयी तो पी लो भाई जल ऐसे भगवान्‌के नामकी प्यास लगनी चाहिये भीतर। दूसरा लेता कि नहीं लेता है। क्या करता है, क्या नहीं करता है। पर खुदको ला ले ही लेना चाहिये।

* * * *

संकीर्तनकी महत्ता

नामसंकीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम्।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम्॥

(श्रीमद्भा० १२।१३।२३)

'जिनके नामका संकीर्तन सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला है और जिनको किया गया प्रणाम सम्पूर्ण दुःखोंको शान्त कर देता है, उन परमतत्त्व-स्वरूप श्रीहरिको मैं नमस्कार करता हूँ।'

इस कलियुगमें भगवन्नामकी सबसे अधिक महिमा है। यद्यपि नामकी महिमा सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि—इन चारों ही युगोंमें है, तथापि कलियुगमें तो मनुष्योंके लिये भगवन्नाम ही मुख्य आधार है, आश्रय है तथा भगवन्नाम ही कल्याणका सुगम और सर्वोपरि साधन है।

भगवन्नामका एक मानसिक जप होता है, एक उपांशु जप होता है, एक साधारण जप होता है और एक संकीर्तन होता है। मानसिक जप वह होता है, जिसमें मनसे ही नामका जप-चिन्तन हो तथा जिसमें कण्ठ, जिह्वा और होंठ न हिलें। उपांशु जप वह होता है, जिसमें मुख बंद रखते हुए कण्ठ और जिह्वासे जप किया जाय तथा जो अपने कानोंको भी सुनायी न दे। साधारण जप वह होता है, जिसमें अपने कानोंको भी नाम सुनायी दे और दूसरोंको भी सुनायी दे। संकीर्तन वह होता है, जिसमें राग-रागिनियोंके साथ उच्च स्वरसे नामका गान किया जाय। भगवान्‌के

नामके सिवाय उनकी लीला, गुण, प्रभाव आदिका भी कीर्तन होता है परंतु इन सबमें नाम-संकीर्तन बहुत सुगम और श्रेष्ठ है।

जैसे मानसिक जपमें मन जितना ही तल्लीन होता है, उतना ही व अधिक श्रेष्ठ होता है, ऐसे ही नाम-संकीर्तनमें ताल-स्वरसहि राग-रागिनियोंके साथ जितना ही तल्लीन होकर ऊँचे स्वरमें नामका गा किया जाय, उतना ही वह अधिक श्रेष्ठ होता है।

नाम-संकीर्तन मस्त होकर, भगवान्‌में मन लगाकर किया जान चाहिये। मन लगानेका अभिप्राय है कि दूसरे लोग मुझे देख रहे हैं य नहीं, दूसरे लोग कीर्तन कर रहे हैं या नहीं, मेरे कीर्तनका लोगोंपर क्य असर पड़ रहा है—ऐसा मनमें भाव बिलकुल न रहे। ऐसा भाव वास्तवमें कल्याण करनेमें बड़ा बाधक है। संकीर्तनमें दिखावटीप आनेसे वह मान-बड़ाई आदिकी लौकिक वासनामें परिणत हो जाता है और उसका प्रभाव जीवनपर कम पड़ता है।

लोकवासना, देहवासना और शास्त्रवासना—ये तीन वासना (इच्छाएँ) हैं। ये सब बहुत पतन करनेवाली हैं। संकीर्तन करते हुए शुभ कार्य करते हुए, सत्सङ्ग करते हुए, प्रवचन देते हुए, कथा कहते हुए भी यह कूड़ा-कचरा (वासनाएँ-इच्छाएँ) साथमें मिल जाता है त संकीर्तन आदिका जो माहात्म्य है, वह नहीं रहता। यद्यपि नाम-जप, कथ कीर्तन, सत्सङ्ग आदि कभी निष्फल नहीं जाते, उनसे लाभ अवश्य होत है, तथापि इन वासनाओं-इच्छाओंके कारण उनसे विशेष लाभ नहीं होता बहुत थोड़ा लाभ होता है।

भगवान्‌में मन लगाकर, तल्लीन होकर नाम-संकीर्तन किया जा तो उससे एक विलक्षण वायुमण्डल बनता है। वह वायुमण्डल स जगह फैल जाता है, जिससे संसारमात्रका हित होता है। शब्द व्याप है—इस बातका तो आविष्कार हो चुका है, पर भाव व्यापक है—इ

बातका आविष्कार अभीतक नहीं हुआ है। वास्तवमें भाव शब्दसे भी अधिक व्यापक है, क्योंकि भाव शब्दसे भी अधिक सूक्ष्म है। जो वस्तु जितनी सूक्ष्म होती है, वह उतनी ही अधिक व्यापक होती है। अतः संसारमात्रकी सेवा करनेमें सेवाका भाव जितना समर्थ है, उतने पदार्थ समर्थ नहीं हैं। भावोंमें भी भगवद्भाव बहुत विलक्षण है, क्योंकि भगवद्भाव चिन्मय तत्त्व है। भगवान्‌के समान दूसरा कोई सर्वव्यापक तत्त्व नहीं है। अतः भगवद्भावसे भगवान्‌के नामका संकीर्तन किया जाय तो उसका संसारमात्रपर बहुत विलक्षण असर पड़ता है; वह संसारमात्रको शान्ति देनेवाला होता है।

शब्दमें अलौकिक शक्ति है। जब मनुष्य सोता है, तब उसकी इन्द्रियाँ मनमें, मन बुद्धिमें और बुद्धि अविद्यामें लीन हो जाती है; परंतु जब सोये हुए मनुष्यका नाम लेकर पुकारा जाय, तब वह जग जाता है। यद्यपि दूसरे शब्दोंका भी उसपर असर पड़ता है, उसकी नींद खुल जाती है, तथापि उसके नामका उसपर अधिक असर पड़ता है। इस प्रकार शब्दमें इतनी शक्ति है कि वह अविद्यामें लीन हुएको भी जगा देता है,* ऐसे ही भगवन्नाम-संकीर्तनसे, जन्म-जन्मान्तरसे अज्ञान-निद्रामें सोया हुआ मनुष्य भी जग जाता है। इतना ही नहीं, नाम-संकीर्तनके प्रभावसे सब जगह विराजमान भगवान् भी प्रकट हो जाते हैं। भगवान्‌ने कहा है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

(आदिपुराण १९।३५)

---

* शब्दशक्तेरचिन्त्यत्वाच्छब्दादेवापरोक्षधीः।
प्रसुप्तः पुरुषो यद्वच्छब्देनैवावबुध्यते॥

'नारद ! न तो मैं वैकुण्ठमें निवास करता हूँ और न योगियोंके हृदयमें ही, अपितु जहाँ मेरे भक्त मेरे नाम आदिका कीर्तन करते हैं, मैं वहीं रहता हूँ।'

भगवन्नामकी अपार महिमा होनेसे उसके मानसिक जपका भी सम्पूर्ण प्राणियोंपर प्रभाव पड़ता है और उससे सबका स्वाभाविक हित होता है; परंतु नाम-संकीर्तनका प्रभाव वृक्ष, लता आदि स्थावर और मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जङ्गम प्राणियोंपर तो पड़ता ही है, निर्जीव-पत्थर, काष्ठ, मिट्टी, मकान आदिपर भी उसका प्रभाव पड़ता है।

जहाँ नाम-जप, ध्यान, कथा, सत्सङ्ग आदि भगवत्सम्बन्धी बातें हो रही हों, वहाँ जानेसे शान्ति मिलती है, पापोंका नाश होता है, पवित्रता आती है, जीवनपर स्वाभाविक एक विलक्षण प्रभाव पड़ता है; परंतु इसकी अपेक्षा भी कीर्तन-प्रेमीपर नाम-संकीर्तनका विशेष प्रभाव पड़ता है। नाम-संकीर्तनमें संकीर्तन सुननेवाले और देखनेवाले—दोनोंपर ही संकीर्तनका प्रभाव पड़ता है। भगवान्‌के दर्शनका जैसा प्रभाव पड़ता है, वैसा ही प्रभाव कीर्तनप्रेमी भक्तपर संकीर्तनका पड़ता है।

कलियुगमें तो संकीर्तनकी विशेष महिमा है—'**कलौ तद्धरिकीर्तनात्**' (श्रीमद्भा० १२।३।५२)। बंगाल और महाराष्ट्रमें संकीर्तनका विशेष प्रचार है। बंगालमें चैतन्य महाप्रभुने और महाराष्ट्रमें संत तुकाराम आदिने संकीर्तनका विशेष प्रचार किया। वाद्यके साथ एक स्वरमें सबके द्वारा मिलकर संकीर्तन किया जाय तो उससे एक विशेष शक्ति पैदा होती है—'**सङ्घे शक्तिः कलौ युगे।**' संकीर्तनके समय अपनी आँखें मीच ले और ऐसा भाव रखे कि मैं अकेला हूँ और मेरे सामने केवल भगवान् खड़े हैं; दूसरोंकी जो आवाज आ रही है, वह भी भगवान्‌की ही आवाज है। इस प्रकार भगवद्भावसे संकीर्तन करनेसे बहुत लाभ होता है और कोई पाप, दुर्गुण-दुराचार नहीं रहता; परन्तु भगवान्‌के

साक्षात् अनुभव तभी होता है, जब केवल शुद्ध कीर्तन हो।

महाराष्ट्रमें समर्थ गुरु रामदास बाबा एक बहुत विचित्र संत हुए हैं। इनके सम्बन्धमें एक बात (कथा) प्रसिद्ध है। ये हनुमान्‌जीके भक्त थे और इनको हनुमान्‌जीके दर्शन हुआ करते थे। एक बार बाबाजीने हनुमान्‌जीसे कहा कि 'महाराज! आप एक दिन सब लोगोंको दर्शन दें।' हनुमान्‌जीने कहा कि 'तुम लोगोंको इकट्ठा करो तो मैं दर्शन दे दूँगा।' बाबाजी बोले कि 'लोगोंको इकट्ठा तो मैं कर दूँगा।' हनुमान्‌जीने कहा कि 'शुद्ध हरिकथा करना।' बाबाजी बोले कि 'शुद्ध हरिकथा ही करूँगा।'

संत तथा राजगुरु होनेके कारण बाबाजीका ऐसा प्रभाव था कि वे जहाँ जाते, वहीं हजारोंकी संख्यामें लोग इकट्ठे हो जाते। उन्होंने एक शहरमें जाकर कहा कि आज रात शहरके बाहर अमुक मैदानमें हरिकथा होगी। समाचार सुनते ही हरिकथाकी तैयारी प्रारम्भ हो गयी। प्रकाशकी व्यवस्था की गयी, दरियाँ बिछायी गयीं। समयपर बहुत-से लोग इकट्ठे हो गये। सब गाने-बजानेवाले आकर बैठ गये और कीर्तन प्रारम्भ हो गया। बीच-बीचमें बाबाजी भगवान्‌की कथा कह देते और फिर कीर्तन करने लगते। ऐसा करते-करते वे कीर्तनमें ही मस्त हो गये। लोगोंको यह आशा थी कि अब बाबाजी कथा सुनायेंगे, पर वे तो कीर्तन ही करते चले गये। लोगोंके भीतर असली भाव तो था नहीं, अतः उन्होंने सोचा कि यह कीर्तन तो हम घरपर ही कर लिया करते हैं; यहाँ कबतक बैठे रहेंगे! ऐसा सोचकर वे धीरे-धीरे उठकर जाने लगे। थोड़ी देरमें सभी लोग उठकर चले गये। धीरे-धीरे गाने-बजानेवाले भी खिसक गये। बाबाजी तो आँखें बंद करके अपनी मस्तीमें कीर्तन करते ही रहे। प्रकाशकी व्यवस्था करनेवाले भी चले गये। अब दरीवालोंको कठिनाई हुई कि बाबाजी तो मस्तीसे नाच रहे हैं, दरी कैसे उठायें। उन्होंने भी अटकल

लगायी। जब बाबाजी नाचते-नाचते उधर गये तो इधरकी दरी इकट्ठी क
ली और जब वे इधर आये तो उधरकी दरी इकट्ठी कर ली और च
दिये। जब सब चले गये, तब हनुमान्‌जी प्रकट हो गये। बाबाजी
हनुमान्‌जीसे कहा कि 'महाराज! सबको दर्शन दें।' हनुमान्
बोले—'सब हैं कहाँ?' वहाँ और तो कोई था ही नहीं, केवल बाबा
ही थे।

इस प्रकार भावपूर्वक केवल भगवन्नामका संकीर्तन करना 'शु
हरिकथा' है। इस शुद्ध हरिकथासे भगवान् साक्षात् प्रकट हो जाते हैं
वर्तमानमें संकीर्तनकी बड़ी आवश्यकता है। अतः जगह-जगह लोगों
एक साथ मिलकर अथवा अकेले संकीर्तन करना चाहिये। इस
संसारमात्रमें शान्ति-विस्तार होगा।

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५	गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस	© (०५५१) २३३४७२१, फैक्स २३३६९
	website : www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.o	
दिल्ली-११०००६	२६०९, नयी सड़क	© (०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४
कोलकाता-७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड,	© (०३३) २२६८६८९
	e-mail:gobindbhawan@gitapress.org	फैक्स २२६८०२५
मुम्बई-४००००२	२८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट) मरीन लाइन्स स्टेशनके पास	© (०२२) २२०७२६३
कानपुर-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	© (०५१२) २३५२३५१, फैक्स २३५२३५
पटना-८००००४	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	© (०६१२) २६६२८७
राँची-८३४००१	कोर्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	© (०६५१) २२१०६८
सूरत-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड	
	e-mail: suratdukan@gitapress.org;	© (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६
इन्दौर-४५२००१	जी० ५, श्रीवर्धन, ४ आर एन. टी. मार्ग	© (०७३१) २५२६५१६, २५१११९
जलगाँव-४२५००१	श्रीबल्लभ कॉम्प्लेक्स, नटवर टाकीज (महाराष्ट्र)	© (०२५७) २२२६३९
हैदराबाद-५०००९६	४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	© (०४०) २४७५८३१
नागपुर-४४०००२	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड	© (०७१२) २७३४३५
कटक-७५३००९	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	© (०६७१) २३३५४८
रायपुर-४९२००९	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक (छत्तीसगढ़)	© (०७७१) ५०३४४३
वाराणसी-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	© (०५४२) २४१३५५
	e-mail:varanasidukan@gitapress.org	
हरिद्वार-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	© (०१३३४) २२२६५
ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम	© (०१३५) २४३०१२
	e-mail:gitabhawan@gitapress.org	२४३२७९

स्टेशन-स्टाल

— **दिल्ली जंक्शन** (प्लेटफार्म नं० १२); **नयी दिल्ली** (नं० ८-९); **हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली]** (नं० ४-५); **कोटा [राजस्थान]** (नं० १); **बीकानेर** (नं० १); **गोरखपुर** (नं० १); **कानपुर** (नं० १); **लखनऊ** [एन० ई० रेलवे]; **वाराणसी** (नं० ४-५); **मुगलसराय जं०** (नं० ३-४); **हरिद्वार** (नं० १); **पटना जं०** (मुख्य प्रवेशद्वार); **राँची** (नं० १); **धनबाद** (नं० २-३); **मुजफ्फरपुर** (नं० १); **समस्तीपुर** (नं० २); **हावड़ास्टेशन** (नं० ५ त १८ दोनोंपर); **सियालदा मेन** (नं० ८); **आसनसोल** (नं० ५); **भुवनेश्वर** (नं० १); **राऊरकेल** (पुस्तक-ट्राली); **राजगांगपुर** (पुस्तक-ट्राली); **औरंगाबाद [महाराष्ट्र]** (नं० १); **सिकन्दराबा [आं० प्र०]** (नं० १); **गुवाहाटी जं०** (मुसाफिरखाना); **खड़गपुर** (नं० १-२); **रायपुर [छत्तीसगढ़** (नं० १) एवं **अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।**

फुटकर पुस्तक-दूकानें—

चूरू-३३१००१—	ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क © (०१५६२) २५२६७४
ऋषिकेश-२४९१९२—	मुनिकी रेती,
तिरुपति-५१७५०४—	शॉप नं० ५६, टी० टी० डी० मिनी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, तिरुमलाई हिल्स